दीवाना
तेज साप्ताहिक मनोरंजन टैक्स १ रुपया

चिल्ली लीला

पुराने स्वैटर्ज़,
दस्ताने व जुराबों
की नयी लीला

सर्दियों के मौके पर विशेष

सर्दियां दरवाजा ठकठका रही हैं। अब लोग ऊनी कपड़े स्वैटर वगैरह निकालने लग गये हैं। साथ ही पुराने फेंकने लायक स्वैटर, दस्ताने व जुराबें भी नजर आयेंगी। आप इन्हें फैंकिये मत। इनका उपयोग चिल्ली जानता है। उसने खुद इनका उपयोग किया है। उदाहरण चित्रों में देखिये।

१. दस्तानों की अंगुलियों के सिरे लकीर लगाये स्थान पर काटने से मुर्गे के लिये बढ़िया स्वैटर कम मिकर बन जाता है।

२. स्वैटर की साबुत वाली बांह पूरी काट कर पैरों के लिए दो छेद बनाने पर कुत्ते के लिये स्लीवलैस हाईनीक पुलओव
जाता है।

३ दस्तानों की अंगुलियों को काट कर
साथ जोड़ने पर कुत्ते की पूंछ के
बढ़िया केस बन जाता है।

४. ऊंची गर्दन के कुत्तों के लिये
स्वैटर का काम दे सकता है।

५. आप इसी तरह अक्ल लड़ाकर औ
उपयोग खोज सकते हैं जैसे छिपक
लिये बगैर बाजू का स्वैटर, बक
थनों के लिये दस्ताने, गाय के लि
लर, भैंस के लिये कार्डीगन, चूहे
टाइट पैंट, सांप के लिए टोपी, मे
लिए गाऊन और न जाने कितनी
संभावनायें हैं।

दीवानी चिपकी

काटिये और चिपकाइये

जुआ खेलने से अक्ल आती है

क्योंकि पैसा सारा लुट जाता है।

प्रेम पत्र

पूज्य सरदार स्वर्ण सिंह जी,
सादर प्रणाम।

आपने देश की राजनीति में बड़े-बड़े किले जीते और आज पुरानी कांग्रेस के सिंहासन पर बैठे हुये हैं इस बात की मुझे अत्यन्त खुशी है।

लेकिन इस बात का अफसोस भी है कि आपकी पुरानी नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी ने चिकमगलूर चुनाव लड़कर आपको ऐसे कोने में जा खड़ा किया, जहाँ से न आप जनता पार्टी की ओर कूद सके और न ही इन्दिरा कांग्रेस की ओर।

यदि आप इतने दिन विदेश मंत्री न रहे होते तो अवश्य ही इस कोने से आप की कोई आवाज न निकलती। परन्तु आपने डिप्लोमेसी का सबसे बड़ा सबूत दिया जबकि अपनी पार्टी के रेज्यूलेशन में यह कहलाया, "हम जनता पार्टी को हराना चाहते हैं लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि हम इन्दिरा गांधी को जिताना चाहते हैं।"

आपकी सेवा में यह सुझाव देना चाहता हूँ कि देसी चार्ली ने यह गाना गाया था, "मेरी हां में हां न समझो, मेरी न में न मत समझो।" इसलिये आप जरा सम्भल कर चलें कहीं देश वाले आपको भी चार्ली की पदवी न दे दें।

आपका
चिल्ली

मुख पृष्ठ पर

कोई दाढ़ी छीलते
सोम-बुद्ध-रविवार,
लेकिन चिल्ली खुरचता
दिन में चार-चार बार।
दिन में चार-चार बार
समय भी नहीं गंवाता,
ब्लेड चलाये स्वयं
स्वान बुरा लगाता ॥
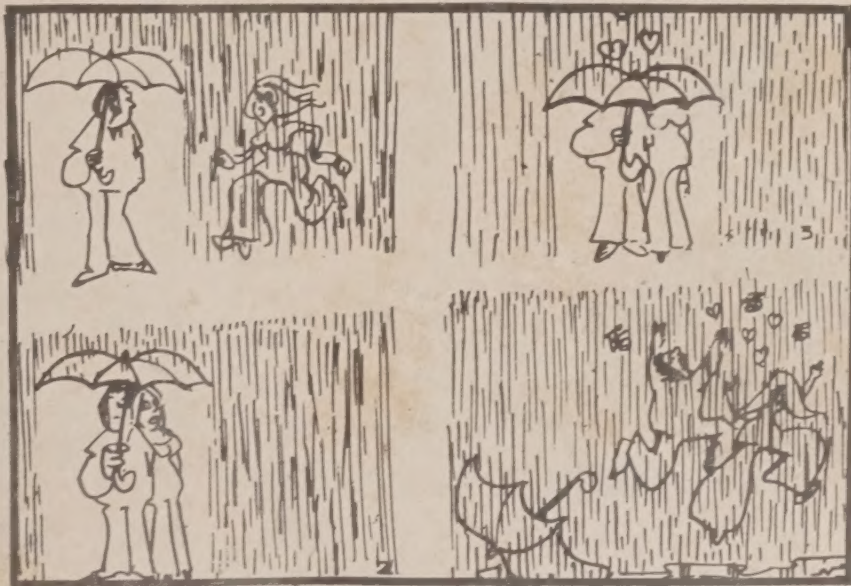
अंक : ३७, ९ नवम्बर से १५ नवम्बर १९७८ तक
वर्ष : १४

सम्पादक: विश्व बन्धु गुप्ता
सहसम्पादिका: मंजुल गुप्ता
उपसम्पादक: कृपा शंकर भारद्वाज
दीवाना तेज साप्ताहिक
८-ब, बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

चन्दा
छमाही: २५ रु०
वार्षिक: ४८ रु०
द्विवार्षिक: ९५ रु०

लेखकों से

निवेदन है कि वह हमें हास्यप्रद, मौलिक एवं अप्रकाशित लघु कथायें लिखकर भेजें। हर प्रकाशित कथा पर 15 रु० प्रति पेज पारिश्रमिक दिया जायेगा। रचना के साथ स्वीकृति अस्वीकृति की सूचना के लिए पर्याप्त डाक टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा संलग्न करना न भूलें। —सं०

दिलीप कुमार चोटरानी, पीलीभीत

प्र० : आपकी कलम में कौनसा जादू है, जो ऐसे मजेदार जवाब देते हैं ?

उ० : जादू-वादू कुछ नहीं, लिखने का है चाव।
स्याही झड़ती कलम से, दिल से झड़ें जवाब ॥

योगेश कुमार अग्रवाल, डीमापुर (नागालैंड)

प्र० : जिसको यह दिल चाहता है, मुझको वह मिल जाय।
धन्यवाद दूँ आपको, हृदय कली खिल जाय ॥

उ० : माला उनके नाम की फेरो नित दो-चार।
निश्चय इक दिन यार का, हो जाए दीदार ॥

सरोज कुमार जैन, इलाहाबाद

प्र० : किसी कोमल कली से मुहब्बत हो जाए तो ?

उ० : होय कली से बेकली, तड़पोगे दिन-रैन।
भौंरा से भिन्नाओगे, पड़े न दिल को चैन ॥

सैयद अब्दुल जब्बार, बीकानेर

प्र० : किसी मुछन्दर को गुस्सा आता है, तो वह मूँछों पर हाथ फेरता है, औरत को गुस्सा आए तो ?

उ० : झगड़ा, झंझट जब कभी होय मियां के साथ।
बेलन के ऊपर तभी बेगम फेरे हाथ ॥
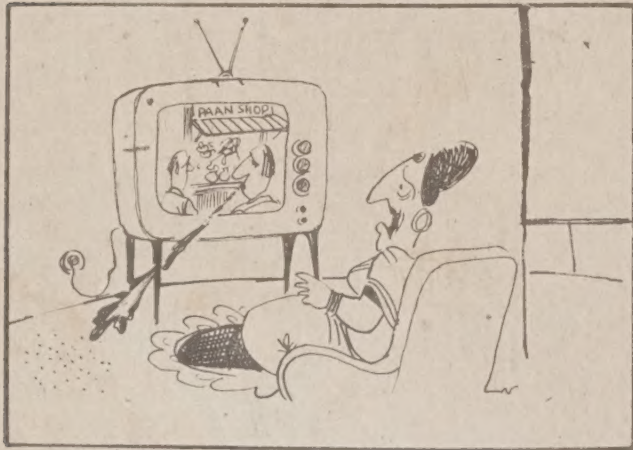
अजय कुमार विश्नोई, कोटद्वार (गढ़वाल)

प्र० : किसी लड़की को देखकर लड़का सीटी बजाए तो, लड़की क्या करती है ?

उ० : सीटी इंजन ने दई, तुरत रेल चल देय।
लड़के को गुंडा समझ, लड़की रस्ता लेय ॥

रंजन शर्मा गाफिल, दुलियाजान (असम)

प्र० : आपके कारतूसों की विशेषता क्या है ?

उ० : प्रश्नपत्र को देखकर, दिल को लें पहचान।
उत्तर वैसा देयँ हम, जैसा हो इन्सान ॥

मुहम्मद रकीम ऐदबी, राय बरेली

प्र० : पुरानी कविताओं से दिलचस्पी कम हो जाती है
आपसे बढ़ती जाती है ?

उ० : काव्य पुराना कभी भी, होता नहीं जनाब।
टिकिट नहीं यह डाक की, जो हो जाए खराब ॥

पदम बहादुर दीवाना दुलियाजान (डिब्रूगढ़)

प्र० : कभी आप अस्वस्थ हो जाते हैं, तो काकी क्या करत

उ० : ऊटपटाँग दवाइयों से होता नुकसान।
स्वस्थ हमें कर देय झट, काकी की मुस्कान ॥

कुमारी मुन्नी वास्तव, महाराज गंज (सीवां)

प्र० : दीवाना के पाठकों से हमको वाहवाही कैसे मिले ?

उ० : भेजो फिल्मी पैरोडी, कविता-कार्टून-लेख।
वाह-वाह कर उठेंगे, आर्ट तुम्हारा देख ॥

निरंकर [illegible] रंगा, बीकानेर

प्र० : इन्सान सुख की नींद कब सोता है ?

उ० : लोभ मोह को छोड़ दे, मन सन्तोषी होइ।
अथवा मर जाये तभी, सुख की निद्रा सोइ ॥

किशोर नारंग 'प्रेमी' इन्दौर

प्र० : आज के युग में सफलता कैसे मिलती है ?

उ० : वोट जिन्होंने दिये थे, उन्हें दिखाओ पीठ।
शासन में घुसपैठ कर, लपको ऊँची सीट ॥

बद्रीप्रसाद वर्मा 'अंजान' गोला बाजार

प्र० : जब कोई पत्नी मां बनने वाली होती है तो प
प्रसन्नता क्यों होती है ?

उ० : चहल-पहल हो जायेगी, बढ़े वंश की बेल।
घर में आये 'खिलौना', खेलें दोनों खेल ॥

राकेशकुमार मिश्रा 'किरण,' रायपुर

प्र० : अगर प्रेमिका पढ़ी-लिखी न हो तो प्रेम पत्रों का उ
दें ?

उ० : पत्र किसी से लिखा कर, ले आये चुपचाप।
डाले लैटरबक्स में, लगा अंगूठा छाप ॥

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर
नई दिल्ली-११०००२

भीड़ से अलग

ओम प्रकाश गुप्ता

पिछले दिनों दादा मुनि (अशोक कुमार) ने अपने घर पर एक पार्टी का आयोजन किया, फिल्म जगत के सभी जाने-माने सितारों को निमंत्रण भेजा गया।

जिस समय अमिताभ बच्चन आये उस समय पार्टी का कार्यक्रम आरम्भ हो चुका था। सभी को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि वे अकेले ही आए थे। डेविड जी ने चुटकी लेते हुए उनसे कहा, 'कहो भई क्या बात है, सुना है आजकल तुम जया का कहा बहुत ज्यादा मानते हो।'

तभी अशोक कुमार ने अमिताभ की तरफदारी करते हुए कहा, 'इसमें कोई नई बात तो नहीं है। सभी अपनी-अपनी बीवियों के कहे में ही चलते हैं।'

'पर हर एक के साथ ऐसा नहीं होता, यकीन न हो तो सभी से पूछ देखो।' यह कह कर डेविड ने ताली बजा कर सभी को अपनी ओर आकर्षित करते हुए कहा, 'अच्छा जी साहबान, आप लोगों में से जो-जो अपनी बीबी के कहे में चलते हैं वे मेरे पास आ जायें और जो नहीं चलते वह अपनी जगह ही खड़े रहें।

सभी लोग डेविड जी की ओर आ गये, केवल दिलीप कुमार ही अपने स्थान पर खड़े रहे। इस पर अशोक कुमार ने पूछा, कि क्या वे वास्तव में सायरा जी का कहा नहीं मानते या किसी और ही कारण से अपने ही स्थान पर खड़े रहे। तब दिलीप जी ने उत्तर दिया, 'भई बात यह है कि आज घर से चलते समय सायरा ने कहा था कि मैं भीड़ से अलग रहूँ।' ●

सूरत ही ऐसी है

ओम प्रकाश गुप्ता

उस दिन हम दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान में इंग्लैंड और भारत के बीच हो रहा क्रिकेट मैच देख रहे थे। संयोग से राजकपूर, डेविड और प्राण भी हमारे आगे वाली 'रो' में बैठे थे। प्राण को बड़ी आदर्शवादी बातें करते देख कर मैंने पूछा, 'प्राण जी! इतने आदर्शवादी होते हुए भी आपको अधिकतर खलनायक की भूमिका ही क्यों मिलती है?' इस पर वे बड़ी मासूमियत से कहने लगे, 'क्या करें भाई! भगवान ने सूरत ही ऐसी बनाई है।' ●

जल्द ही आ रहे हैं बाजार में

यह नये दीवाने माल
(खरीदने के लिए तैयार
मत रहियें)

संजय वैनिशिंग क्रीम

इस क्रीम के प्रयोग से चेहरे पर फोड़े फुन्सियां ऐसे ही नजर नहीं आयेंगी। जैसे सड़कों पर मारुति कारें नजर नहीं आतीं।

कांति पेन्ट ब्रुश

इस ब्रुश से बापों के मुँह पर अच्छी तरह कालिख पोती जा सकती है।

मोहन (धारिया) का मैंगो पब्लिक जूस

मैंगो पब्लिक जूस अर्थात आम जनता का जूस जो जनता के राज में दुकान-दार लोग निकाल रहे हैं।

इन्दिरा टायम वाच

इन्दिरा घड़ी में बटन दबाने प
लोटने का समय यानि कहीं से भ
लोटने का दफ्तर से, खेल से या सत्त
में लौट आने का समय।

सुरेश सुषरायड कैमरा
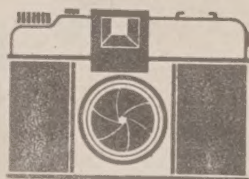
प्रेमी-प्रेमिकाओं के गुप्त फोटो खींचने के लिये सर्वोत्तम कैमरा।

(कैमरा फैक्ट्री का शिलान्यास भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री श्री राजनारायण ने किया था!)

चरण फ्रिज

इस फ्रिज में चीजें उतनी ही ठंडी रहेंगी जैसे इस्तीफा देने के बाद चरणसिंह ठंडे होकर रह गये।

और एक नया प्रकाशन

राजू का राज़

1
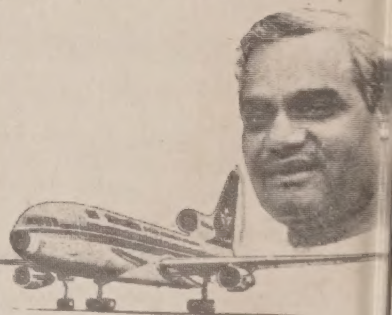
अरे, राजू इस बार फिर प्रथम आया! मगर कैसे? गुरुजी हमेशा उसका पक्ष लेते हैं...श शा...आओ साथियो ज़रा उसके डैस्क की तलाशी तो लें.

2
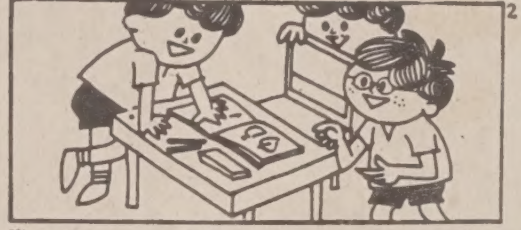
हूँ—! ज़रा इसकी रेखा गणित की कापी तो देखो! ड्रॉइंग कितनी साफ़ और कितनी सही हैं!

3

और यह विज्ञान की कापी...कितने सुन्दर डायाग्राम हैं! गुरुजी ने भी लिखा है, "श्रेष्ठ!" "शाबाश।" अरे जल्दी से रख दो, राजू आ रहा है.

4
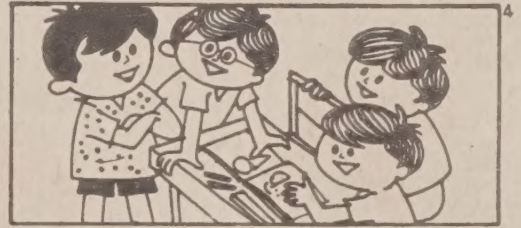
क्या कुछ ढूँढ़ रहे हो भाइयों? हाँ राजू. हम तुम्हारा राज़ ढूँढ़ रहे हैं. क्या कारण है कि तुम्हारा काम हमेशा इतना साफ़-सुथरा रहता है?

5

अत्यंत मामूली बात है दोस्तों. इसका राज़ है मेरा कैमल इंस्ट्रूमेंट्स बॉक्स। एकदम सही! अब तक मैंने जो बॉक्स प्रयोग किये उनमें सर्वोत्तम है यह.

6

अच्छा, माताजी से कहकर एक बॉक्स तुरंत मंगाना चाहिए!
मुझे भी!

राजू के राज़ को अपना राज़ बना लीजिये,
कैमल इंस्ट्रूमेंट्स बॉक्स लाइये
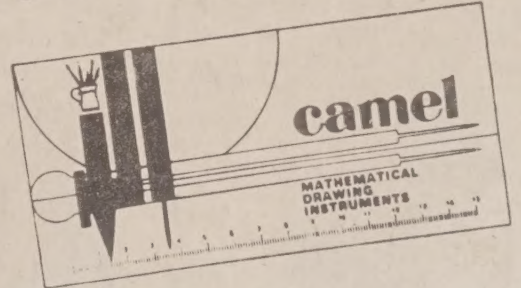
कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिविज़न
बम्बई ४०० ०५९.
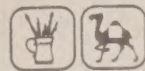
कैमल वाटर कलर पेंटिंग, क्राइलिन कलर पेंटिंग और कार्टूनिंग के पत्र-व्यवहारिक कोर्सों में शामिल हो जाइये। उपर के पते पर सम्पर्क साधिए।

Vision 768 Hin.

इस फीचर के साथ हमारा सलाम आपको

मुफ्त! मुफ्त!!

आप देखते हैं कि कम्पनियां अपने माल के साथ बिक्री बढ़ाने के लिए कभी-कभी माल मुफ्त देती हैं। अगर फिल्मी कलाकार भी ऐसा ही करें जैसे फिल्म स्टार साइन करने वाले निर्माता को प्लास्टिक का गिलास दे या गायक/गायिका गाना गाने वाले म्यूजिक डायरेक्टर को चमचा दे। ऐसी ही कल्पना पर आधारित है यह फीचर।

जीनत

मुफ़्त

हर कांट्रेक्ट पर राजकपूर के फार्म में उगे आलू से बनी चाट की एक प्लेट।

दारा सिंह
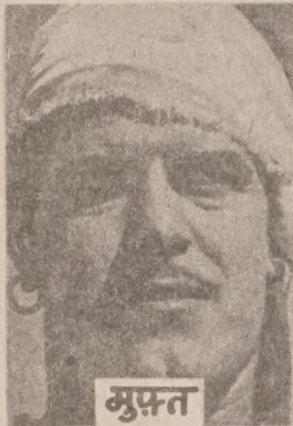
मुफ़्त

रोल देने वाले हर निर्माता की पीठ पर एक धौल।

किशोर
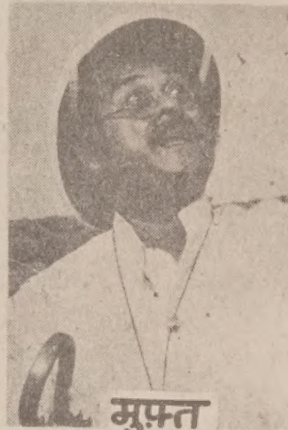
मुफ़्त

हर गाने के साथ एक डिडली ऐ डुडलाये।

सारिका

मुफ़्त
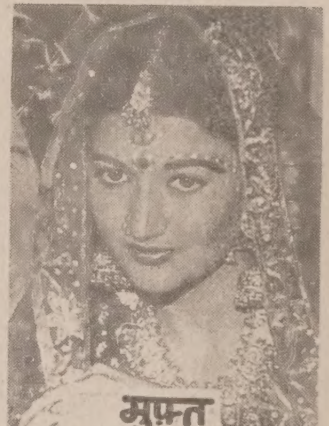
कांट्रेक्ट पर दस्तखत करने के लिये पैन में स्याही अपनी भरूंगी।

परवीन

मुफ़्त

हर प्रोड्यूसर को कबीर बेदी या डैनी का एक चटपटा किस्सा।

योगिता बाली

मुफ़्त

वैवाहिक जीवन की समस्याओं पर सलाह।

विद्यासिन्हा

मुफ़्त

हर निर्माता को झुर्रियां मिटाने वाली क्रीम की खाली शीशी।

राजकुमार

हर निर्माता से एक नखरा मुफ्त उठवाऊंगा।

नीतू सिंह

हर रोल ऑफर करने वाले को मेरी शादी में आने का एडवांस निमंत्रण।

विनोद मेहरा
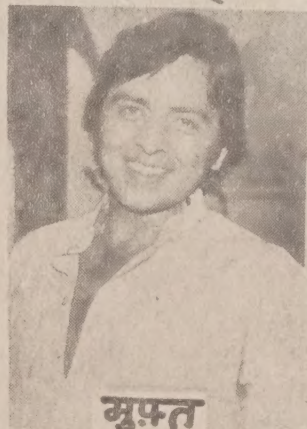
मीना के हाथ की बनी चाय।

राजेश खन्ना

हर रोल ऑफर करने वाले निर्माता को एक-एक पिटा हुआ मोहरा।

धर्म

हर निर्माता को गुड़ की एक भेली।

जयश्री टी०

हर प्रोड्यूसर को कमर का एक लचका मुफ्त।

रेखा

मुफ्त में शूटिंग के समय निर्माता को चक्कर दूंगी।

ऋषि

नीतू सिंह की मम्मी का टेलीफोन नम्बर।

आशा भौंसले

मुझसे गाना गवाने वाले संगीत निर्देशक को एक हिचकी। यह आफर केवल जनवरी तक है।

अपने प्रश्न केवल पोस्ट कार्ड पर ही भेजें।

संजीवमोचन—जालन्धर : दीवाना में कार्टून छपवाना चाहता हूं, क्या करूं ?
उ० : अपने कार्टून सम्पादक दीवाना के पते पर भेज दीजिये। मनोरंजक हुये तो प्रकाशित कर दिये जाएंगे।

मदन लाल वर्मा—अमृतसर : हमारे यहां आपकी शक्ल जैसा और आप जैसी बातें करने वाला एक चाचा है। उसे अगर आपकी जगह दे दी जाए तो कैसा रहेगा ?
उ० : हम इस ओखली से अपना सर निकाल कर उसका सर ओखली में दे देंगे। फिर मूसल पड़ने पर वह ही बतायेगा की कैसा रहा।

कालानी महेश—उल्हासनगर : चाचा जी, दीवाना ने हम पर जो ज्यादतियां की हैं। उनकी शिकायत हम कौन से आयोग के सामने करें ?
उ० : जनता पार्टी की सरकार के पास अभी जनता का बहुत रुपया है लुटाने के लिये। उससे कहिये वह कोई नादिरशाह आयोग बैठा दे। इस बात की जांच करने के लिये कि दीवाना ने आपके कितने ग़मों की खाट खड़ी कर दी है ? आंसूओं के कितने महल गिरा दिये और आपकी परेशानियों की बस्तियां उजाड़ दीं ?

रोशन व्यास, "त्यागी"—इन्दौर : चाचा जी, अगर आपके भी बन्दर जैसी पूछ होती तो ?
उ० : तो भी हम आपके चाचा ही कहलाते। हमें तो यह कहते शर्म नहीं आती की हमारे चाचा के वास्तव में दुम थी। जी हां, 'डार्विन' की थ्योरी के अनुसार मनुष्य पहले बन्दर था।

अशोक जोहर "गगन",—देहरादून : आप किस चक्की का आटा खाते हैं, जो इतने बातूनी हैं ?
उ० : यह राज़ की बात आपको बता ही दें। पिछले दिनों हमारे जन्म पर हमारी श्रीमती जी ने एक बड़ा सा डिब्बा उपहार में दिया था। खोल कर देखा तो उसमें एक चक्की भी। वह बोलीं, "आपकी सेहत बनाने के लिये लाई हूं। अब घर की चक्की का अपने हाथ का पिसा हुआ आटा खाया करो।" तब से हम जितना आटा खाते हैं, उससे अधिक वह आटा हमारे आंसू पी जाता है।

तहसीनुद्दीन, मोहसीनुद्दीन—जाफराबाद : चाचा जी, आपके पास कुछ पुराने प्रेम पत्र तो अवश्य पड़े होंगे ?
उ० : इस मैदान में बिल्ली भी हमारा उस्ताद है। अगर हम उसका हाथ न रोकें तो वह हर सप्ताह शुरू से लेकर आखिर तक पूरा दीवाना प्रेम पत्र से भर दे।

वेद प्रकाश सम्राट—मुगलसराय : मनुष्य किसी काम में असफल हो जाये तो सारा दोष भाग्य को क्यों देता है ?
उ० : क्योंकि किसी और को दोष दे तो वह पलट कर दो झापड़ मार दे। भाग्य बेचारा कुछ नहीं कहता।

पवन खत्री बैरागी—इन्दौर : [illegible] आप चुनाव में खड़े हों तो क्या आ[illegible] को उम्मीद है कि आप जीत जायेंगे ?
उ० [illegible]मारा दिमाग अभी इतना खराब नहीं हुआ है कि "उम्मीद होगी" या "नहीं होगी" का पता लगाने के लिये चुनाव में खड़े हों। हमें बहुत से ऐसे खड़े होने वालों का पता है, जो ऐसे लेटे कि बैठने की काबिल भी न रहे। पिछले चुनाव में लोग कहते थे, चाहे कुत्ते को वोट दे दें पर कांग्रेस को नहीं देंगे। इसके बाद अब कभी चुनाव की बात हो, तो हमारा कुत्ता दुम हिलाने लगता है।

योगेश कुमार अग्रवाल—डीमापुर : मरते समय एक नेता क्या सोचता है ?
उ० : नेता इतनी आसानी से मरता ही कहां है, जो हम इस बारे में कुछ सोचें। हमारी बात पर विश्वास हो तो उंगलियों पर नेताओं के नाम गिन कर देख लीजिये। इसी बात पर सुना है हमारा स्वास्थ्य मंत्रालय इस सुझाव पर विचार कर रहा है कि यदि लोगों को लम्बी उम्र तक जीवित रखने की कोई योजना हो तो देश की सारी आबादी को नेता बना दिया जाये।

सतीश कसेरा—अबोहर : शादी करने का कोई ढंग बताइये ?
उ० : कम्बल में मुंह ढक कर बिना आवाज की दहाड़ें मार-मार कर रोइये और जब बाहर मुंह निकालें तो बत्तीसी फाड़ कर मुस्करा दीजिये। बिना शादी के शादी की सब रसमें पूरी हो जाएंगी।

नरेन्द्र डेविड "निन्दी"—कपूरथला : अचानक आपके सामने भगवान आ जाये तो आप क्या करेंगे ?
उ० : उससे कहेंगे, माई डियर भगवान ! तू कभी उस युग में आया होगा जब लोग सोना उछालते चलते थे और उन्हें कोई कुछ नहीं कहता था। आज तू टमाटर उछालता हुआ भी किसी सुनसान सड़क पर निकल जाए तो लोग उसके साथ तेरी लंगोटी भी उतार कर ले जाएंगे अगर ऐसा न हो तो हमारा नाम चाचा बातूनी नहीं।

आर० के० साजन—बरबसपुर : चाचा जी, मैं चेलाराम का उल्लू खरीदना चाहता हूं कृपया कीमत बताइये।
उ० : केवल एक रुपया, पर यह आपको केवल दीवाना के पृष्ठों पर ही मिल सकता है।

कूपन
आपस की बातें
दीवाना साप्ताहिक
८-बी बहादुर शाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली ११०००२

बन्द करो बकवास

जै रघुनन्दन जै सियाराम
हे दुःख मन्जन तुम्हें प्रणाम।
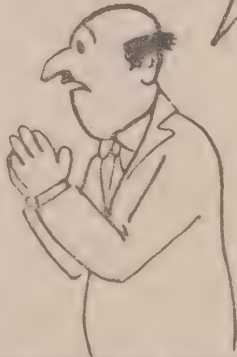
बन्द करो बकवास साहब, पिछली बार बिल देख के तो हम तीनों को गालियां दे रहे थे। अब मोटर खराब हो गई है तो फिर हमारे पास आ गये हो।

मैं पटने की हूं नार सुनो जी मैं पटने वाली हूँ

बन्द करो बकवास, माना कि तुम पटना, बिहार की हो फिर भी मैं तुम्हें अन्दर नहीं जाने दूंगा।
शत्रुघन सिन्हा

मम्मी ओ मम्मी, तू कब सास बनेगीऽऽऽ
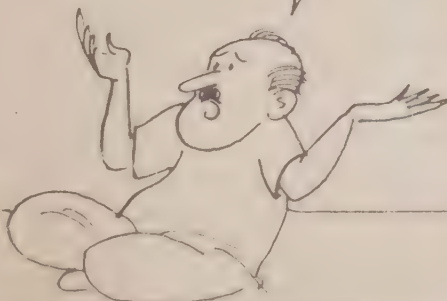
बन्द करो बकवास, दहेज का लालच तुम्हें है, मुझे नहीं। पहले मेरा बेटा कम से कम बी० ए० पास कर ले फिर मैं सास बनूंगी।
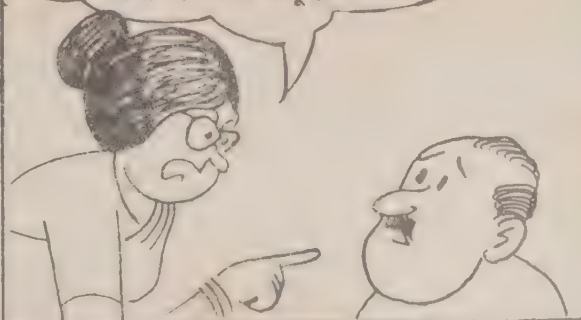
वंदना दशरथ के बिल्कुल पास पहुँच कर रुक गई थी—दोनों एक-दूसरे को देखते रहे···फिर वंदना के होंठों की मुस्कराहट गहरी हो गई—

'क्या देख रहे हो इतने ध्यान से···?'

'सफेद झूठ···।' दशरथ ने मुस्करा कर कहा।

'अर्थात् ?'

'जब तुम लाल रंग के अलावा कोई और रंग प्रयोग करती हो तो ऐसे लगता है कि तुम कोई झूठ बोल रही हो।'

'कोई-कोई झूठ बहुत सुन्दर भी होता है।'

'हाँ···लेकिन सच से बेहतर कोई चीज नहीं।'

वंदना का चेहरा उतर गया···दशरथ ने फिर मुस्करा कर कहा—

'और सच यह है कि तुम्हें लाल जोड़ा पहनना है और जरूर पहनना है।'

वंदना के चेहरे की रौनक वापस आ गई और वह धीरे से बोली—

'सुनो दशरथ···क्या यह नहीं हो सकता कि दुल्हन लाल जोड़ा न पहने बल्कि कोई और रंग का जोड़ा पहने ?'

'अगर दुल्हन है तो लाल जोड़ा ही पहनेगी···लेकिन तुम दुल्हन होकर लाल जोड़ा क्यों नहीं पहनना चाहतीं ?'

'मैं यूँ ही कह रही थी···' वन्दना हँस पड़ी।

'मैं इस यूँ ही का कारण बताऊँ ? दशरथ ने मुस्करा कर कहा—

'बताओ—।'

'जाने दो···तुम फिर उदास हो जाओगी।'

'शायद किसी और ने भी तुम्हें लाल जोड़ा पहना कर दुल्हन बनाने का वचन दिया था।'

वंदना का चेहरा फिर सफेद पड़ गया··· लेकिन उसने झट अपने आपको संभाल लिया और बोली—

'तुम्हारा विचार है कि मैं ज्योतिषी की बात से डरती थी। दशरथ हंस पड़ा और बोला—

'कहो तो यह भी बता दूं कि उसका प्यार सच्चा नहीं था।'

'क्या ?'

वंदना चौंक कर दशरथ की ओर देखने लगी···दशरथ ने मुस्करा कर कहा—

'हाँ वह तुम्हारे शरीर के ग्लैमर पर मरता था।'

वंदना सन्नाटे में खड़ी दशरथ को देखती रही—दशरथ ने फिर कहा—

'लेकिन शायद किसी लड़की में उसे तुमसे अधिक ग्लैमर दिखाई दिया और वह तुम्हें छोड़ कर चला गया।'

वंदना की आवाज थर-थर कांप रही थी—

'त···त···तुम उसे जानते हो ?'

'निजी रूप से नहीं।'

'उससे पहले मिल चुके हो ?'

'अगर कहो तो गीता की सौगन्ध खा लूँ कि नहीं।'

'फिर···फिर तुम···तुम क्या सचमुच भूत हो ?'

नहीं वंदना···केवल अनुमान।'

इतना सत्य अनुमान ?'

तुम्हारी पसन्द देख कर···और फिर तुम्हीं ने बताया था कि तुम दुल्हन न बन सकोगी।'

'हाँ—।'

'बीच में तुमने मुझे डिनर पर बुलाते समय कहा था कि मैं तुम्हारे शरीर के ग्लैमर पर नहीं फिसला इसलिए तुम मुझे दोस्त बनाना चाहती हो।'

'हाँ—'

'फिर जब मैं पहली बार तुम्हारे घर गया तो तुमने मुझे अपने 'ग्लैमर' की ओर आकृष्ट करना चाहा था।'

'हाँ—।'

'लेकिन नहीं—शायद तुम मेरी परीक्षा ले रही थीं इसलिए कि ग्लैमर पर मरने वाला सच्चा प्यार नहीं दे सकता—तुमने देख लिया कि मुझे ग्लैमर पसन्द नहीं।'

'हाँ—।'

'और इसलिए तुम्हें विश्वास है कि मैं छोड़ कर नहीं जाऊंगा।'

वंदना ने एक लम्बी सांस ली और बोली···

'तुम ठीक कहते हो···वह मेरा पहला प्यार था···लेकिन मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि वह मुझे धोखा देकर चला जाएगा···उसके धोखा देने के बाद मुझे लगा था कि ज्योतिषी की अग्रसूचना ठीक ही थी··· मेरे भाग्य में सुहागिन बनना ही नहीं लिखा हुआ।'

'और अब—?'

'अब···अब' वंदना कुछ उलझ सी गई और बोली—'अब मेरी समझ में कुछ नहीं आता।'
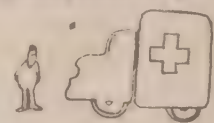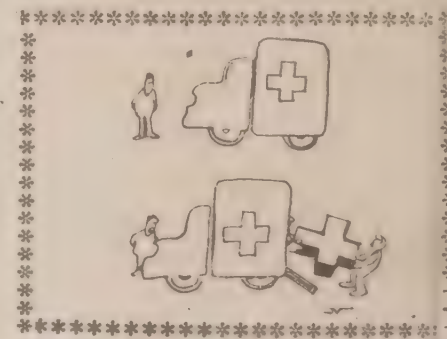
'जो नहीं आता···वह मुझसे पूछो।'

'क्या पूछूँ ?'

'क्या तुम अब भी यही सोचती हो कि तुम्हारे भाग्य में सुहागिन बनना नहीं है—।'

'नहीं—यह अब मैं नहीं सोचती।'

'फिर क्या सोचती हो ?'

वंदना अपना माथा रगड़ने लगी और बोली—

'मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता कि मैं क्या सोचती हूँ—'

'तुम कार अब तेजी से क्यों नहीं चलातीं ?'

'मुझे पता नहीं।'

'तुम अब ग्लैमर गर्ल क्यों नहीं दिखाई देतीं?'

'मुझे पता नहीं।'

'तुम अब इतनी शोख, चंचल और नटखट क्यों नहीं रहीं?'

'मुझे कुछ पता नहीं।'

'मैं तुम्हें बताता हूं···यह सब परिवर्तन क्यों है?'

'क्यों है?'

इसलिए कि तुम धीरे-धीरे अपने मन को बदलने का प्रयत्न कर रही हो।'

ऐसा तो मैं अनुभव करती हूं···लेकिन मैं अपने आप को क्यों बदलने का प्रयत्न कर रही हूं।'

'इसलिए कि तुम सुहागिन बनना चाहती हो—तुम्हें लाल जोड़ा पहन कर दुल्हन बनना है···और तुम्हें तुम्हारे इस दिन को दुल्हन बनाने का वचन मैंने दिया ···तुम अपने आपको मेरी रुचि के सांचे में ढालने का प्रयत्न कर रही हो।'

'मैं यह भी मानती हूं' वंदना उलझी हुई-सी बोली, 'मैं अपने आप को तुम्हारी रुचि के अनुसार ढालने का प्रयत्न कर रही —लेकिन फिर भी ऐसा क्यों होता है?'

'कैसा?'

'मैं जब कभी तुमसे मिलने आती हूं··· मेरे दिल में एक कसक क्यों होती है? मुझे ऐसा क्यों लगता है कि मैं सचमुच अपने आप से झूठ बोल रही हूं? फिर मैं तुम्हारे सामने आ जाती हूं तुम मेरे सामने होते हो तो मैं तुम्हें ध्यान से देखती हूं···मैं तुम्हारे बालों के ढंग से सुरेश के बालों की तुलना करती ···तुम्हारे चेहरे को सुरेश के चेहरे से मिलाने लगती हूं···तुम्हारे स्वर को उसके स्वर से मिलाती हूं···तो लगता है जैसे तुम सुरेश हो···हू-ब-हू सुरेश दूसरे सुरेश—लेकिन बाद में तुमसे दूर चली जाती हूं तो लगता है तुम्हारा कुछ भी सुरेश से नहीं मिलता—तुम दशरथ हो—सुरेश नहीं।'

दशरथ ध्यानपूर्वक वंदना को देखता रहा और बोला—

'तुमने कभी इसका कारण जानने के लिए अपना मानसिक विश्लेषण किया है!'

'नहीं—मुझे उलझन होने लगती है—और थोड़ी देर बाद वह उलझन घबराहट में बदल जाती है—।'

'मैं तुम्हें बताता हूं—तुम सुरेश से अब भी प्यार करती हो—क्योंकि सुरेश तुम्हारा पहला प्यार था।'

'यह झूठ है—मुझे सुरेश से घृणा है।'

'निःसन्देह···लेकिन घृणा तुम्हें सुरेश से नहीं सुरेश की बुराइयों से घृणा है—उसकी अच्छाइयाँ आज भी उसका प्यार बन कर जिन्दा हैं—और उन्हीं अच्छाइयों की छाया जब तुम्हें मुझ में दिखाई देती है तो तुम मुझसे प्यार करने लगती हो—यह वह अच्छाइयां हैं जो तुम सुरेश में देखना चाहती थीं—वही तुम मुझ में देख रही हो—'

'लेकिन···लेकिन···इन सब बातों का··· इस उलझन का अन्त होगा?'

'दुल्हन···।'

'मतलब···?'

'तुम दुल्हन बनोगी···लाल जोड़ा पहन कर···।'

'अर्थात्···मैं सुहागिन बन जाऊंगी।'

'हां—।'

'तुम्हारी पत्नी···?'

'हां···मेरी पत्नी।'

'और तुम्हारी पत्नी बनने के बाद भी अगर सुरेश के लिए मेरे मन में ऐसी ही घृणा रही जिसे तुम उसका प्यार कहते हो—तो क्या होगा?'

'वंदना! तुमने कभी पवित्र अग्नि को ध्यानपूर्वक देखा है?'

'नहीं···जब से ज्योतिषी की अग्रसूचना का पता चला था मैं अग्नि से डरने लगी थी···मुझे अग्नि विवाह के मंडप में लगे हवन कुण्ड के रूप में दिखाई नहीं दी बल्कि चिता बन कर लगी···'

'चिता की ज्वाला तो वह अग्नि है जो इन्सान को अमर कर देती है···उसका शरीर भले ही जल जाए उसकी आत्मा शरीर के बन्धनों से मुक्त होकर निरवाण पाती है··· अमर हो जाती ही—इसी प्रकार लग्न मंडप में जलने वाली अग्नि है जिसके गिर्द फेरे लेने वालों का सम्बन्ध अमर हो जाता है—ऐसा अमर कि वह जन्म-जन्मान्तर तक चलता है···उस अग्नि कुण्ड के गिर्द फेरे लेने से स्त्री अथवा पुरुष अगले पिछले सारे सम्बन्ध भूल जाते हैं।'

'मतलब तुम्हारे साथ फेरे हो जाने के बाद मैं सुरेश को भूल जाऊंगी।'

'बिल्कुल भूल जाओगी।'

'तुम यह जानते हुए भी कि मैं सुरेश से प्यार करती थी···और उसके लिए आज भी मेरे मन में कसक है—मुझसे शादी कर लोगे?'

'हां—यह मेरा ··· है—मेरी भाग्य रेखा में तुमसे यह घनिष्ट सम्बन्ध लिखा है—।'

वंदना ध्यानपूर्वक दशरथ को देखती रही···फिर बोली।

'क्या तुम भी मेरे सुन्दर शरीर ही से प्यार करते हो?'

'हाँ—यह सच है···।'

'और इसी के लिए मुझसे शादी करोगे?'

'हाँ वंदना···यह भी सच है।'

'फिर तुममें और सुरेश में अन्तर क्या रह गया?'

'बहुत बड़ा अन्तर है वंदना।'

'मैं भी तो सुनूं।'

'वंदना! सुरेश को तुमसे अधिक कोई सुन्दर लड़की दिखाई दे गई इसलिए उसने तुम्हें छोड़ दिया···लेकिन मुझे स्वर्ग से उतरी अप्सरा भी बहकाने का प्रयत्न करे तो भी मैं उसका शारीरिक सौन्दर्य देख कर नहीं बहक सकता—मैं तुम्हारे सौन्दर्य की पूजा अन्तिम सांस तक करूँगा।'

'लेकिन रहोगे 'शरीर' ही के पुजारी।' वंदना ने व्यंग्य से कहा।

वंदना! तुम भूल रही हो कि भगवान को दुनिया में किसी ने नहीं देखा लेकिन उसकी पूजा करने के लिए ··· हमें उसका शरीर बनाने की आवश्यकता होती है··· भगवान का शरीर हम अपने हाथों से बनाते हैं···और उसकी पूजा भी स्वयं ही करते हैं···लेकिन वह पूजा उस पत्थर मिट्टी की मूर्ति के शरीर की नहीं बल्कि उस परमात्मा की पूजा होती है जिसकी कल्पना करके हम उसकी रचना करते हैं।'

वंदना ध्यान से दशरथ को देखती रही···फिर बोली—

'तुम ··· कह रहे हो दशरथ।'

'भगवान साक्षी है कि मैं सच कह रहा हूं।' दशरथ ने कहा, 'वरना तुम स्वयं बताओ

शेष पृष्ठ ३९ पर
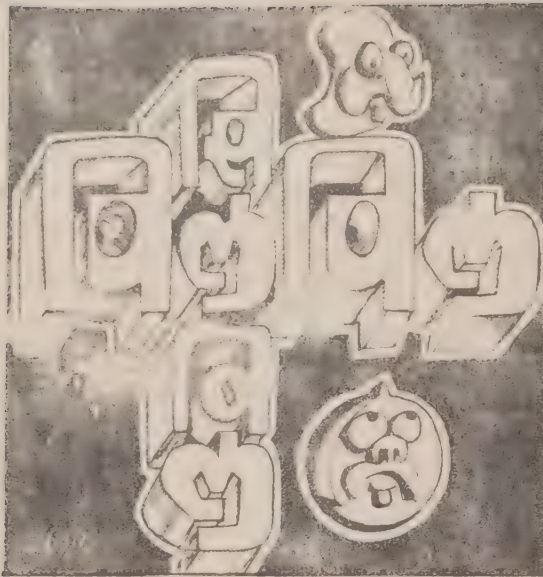
पिलपिल-सिलबिल पहाड़ पर शिकार खेलने जाते हैं। वहां एक ऐसी जादूगरनी अंग्रेज महिला का उन्हें पता लगता है जो जादू टोना कर सैकड़ों मील दूर बम्बई, कलकत्ता व दिल्ली आदि शहरों में लोगों को मारती है। मरने वाले बेवारिस अमीर होते हैं। उनके मरने के बाद जायदाद उसी रिश्तेदार को प्राप्त होती है जो उस जोगिन जादूगरनी से मौत के लिये टोना करवाता है। दूर पहाड़ में एकांत में बने डाकबंगले में जो भी आकर ठहरा वह जादूगरनी के पास गया, टोना करवाया एक महीने के अन्दर उसके किसी मालदार रिश्तेदार की प्राकृतिक बिमारी से मृत्यु हुयी और उसे भारी आर्थिक लाभ पहुंचा। पिलपिल जादू टोने में विश्वास नहीं करता। जोगिन के जादू से किस तरह लोग मरते हैं इसकी साक्षात जांच करने के लिए वह जोगिन से मिल कर अपनी ही कम्पनी की एसिस्टेंट जासूस मिस रूबी की मौत के लिए जादू टोना करवाता है। मरवाने का कारण ठोस बनाने के लिये पिलपिल अपने चाचे से मिल नाटक रचता है। उसका चाचा रूबी को गोद ले सारी जमीन उसके नाम करता है। उधर रूबी की सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया जाता है। जादू करवाने के पांच दिन बाद लौटने पर उन्हें पता लगता है कि रूबी बीमार हो गई है उसे नर्सिंग होम में भर्ती कर दिया गया है आगे

आप तो बेकार में परेशान हो रहे हैं। यह तो एक महज इत्तफाक ही हुआ कि आपने टोना करवाया और मैं इत्तफाक से बीमार हो गई। कहीं टोने-टोटके का असर पहाड़ से पांच सौ मील दूर दिल्ली बैठे किसी व्यक्ति पर हो सकता है ? मैं ठीक हो जाऊंगी।

टोने टोटके पर विश्वास तो मुझे भी नहीं है लेकिन अपने सामने जो हो रहा है उससे कैसे आंखें मूंद लूं।
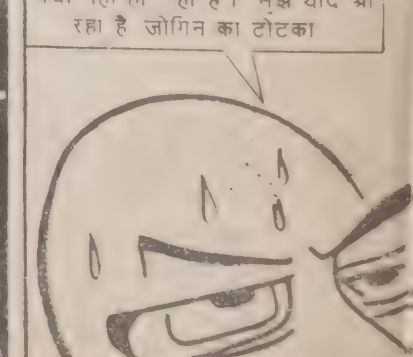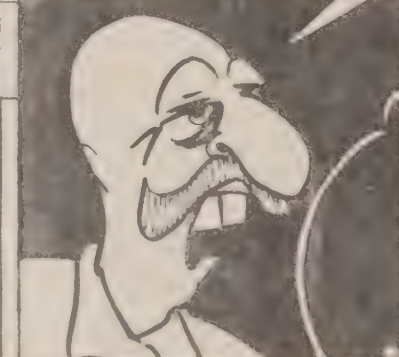
काले कव्वे का सिर काट उसका उल्टा पकड़ खून की बूंद रूबी के फोटो पर टपकाते हुए उसने कहा था, 'काले कव्वे मैंने तुम्हारी आत्मा मुक्त कर दी है अब तुम भैरोदेव के दूत हो जिस फोटो पर तुम्हारे शरीर का खून टपक रहा है तुम्हें उसके साथ एक होना है रूबी के जीवन का उद्देश्य पूरा हो चुका है उसकी आत्मा भी आज़ाद होना चाहती है। मौत सब दुखों का अन्त है सब महान व्यक्ति मौत को प्राप्त हो चुके हैं हे भैरों देवता के दूत रूबी के शरीर मे प्रवेश करना कमजोर जगह मर्म स्थल उसके शरीर का मर्म स्थल शरीर के मास के भीतर छिपा मर्म स्थल कमजोरी से ही अथाह शक्ति पैदा होती है मौत की तरफ प्राकृतिक रूप से उसे मौत की तरफ ले जाओ शरीर की नस-नस और तंतुओं को कब्जे में करो। गुलाम बनाओ, बिमारी के लिये दरवाजा खुलवाओ। शरीर के रक्षक जीवाणुओं को सुला दो ताकि रोग फैल सके… उन्हें आज्ञा दो मृत्यु की ओर यात्रा करें। दवाओं के प्रभाव में न आये मौत मौत जल्दी मौत लम्बी गहरी नींद लाने वाली सुखदायक मौत मौत मौत।

वहे मुझे रातों को नींद नहीं आ रही है। मैंने यह क्या कर दिया? दिनों दिन रूबी की हालत बिगड़ती जा रही है। दवा बदलने का प्रभाव नहीं हो रहा है। अपनी जिद्द में आकर किसी की जान से खेल गया। उसकी मौत की पूरी जिम्मेवारी मेरे सिर पर होगी। मैं खूनी हूँ! अब दोनों कम्पनी चलाना। मैं तो काशी जाकर बस जाऊंगा या फिर साधु बन कर हिमालय की तरफ निकल जाऊंगा।
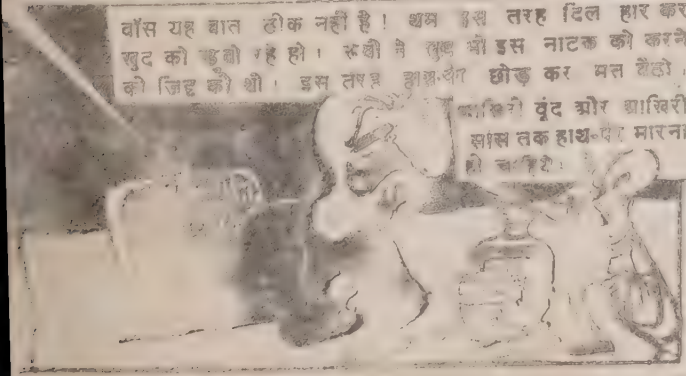
चलो, एक बार फिर मान लो कि जादू टोना बकवास है। यह अंधविश्वासी दिमागों की उपज है। हम नये सिरे से फिर जांच पड़ताल शुरू करेंगे। आखिर बीसवीं सदी है, यह पाषाण युग नहीं।

भाई जी, आपका दिमाग फिर फिरने लगा है। जादू टोना सच है।

अगर जादू टोना सच है … रखते … रहे हैं? जादू टोना … का करवाओ। … में हजारों लुटेरे … क्या बिगाड़ लिया … को जवाब …
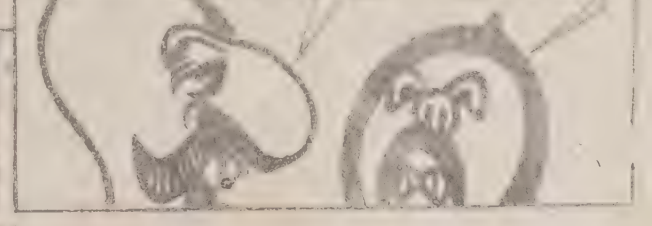
मैंने सेलविल को रूबी से यह पता करने भेजा है कि बीमार पड़ने से दो-तीन रोज पहले कौन-कौन बाहर के व्यक्ति उससे मिलने आये थे। कोई ऐसा संदिग्ध व्यक्ति आया हो। मैं पिछले दो महीनों में मरने वाले उन व्यक्तियों के नौकरों से भी प्राइवेट जासूसों द्वारा जांच करवाता हूँ। अगर जादू टोने के पीछे कुछ घोटाला है तो इन मामलों में कोई न कोई बात कॉमन होनी चाहिये।
नौकरों से पुछवाना, क्योंकि नया मालिक तो खुद जादू करवाने वाला होगा।
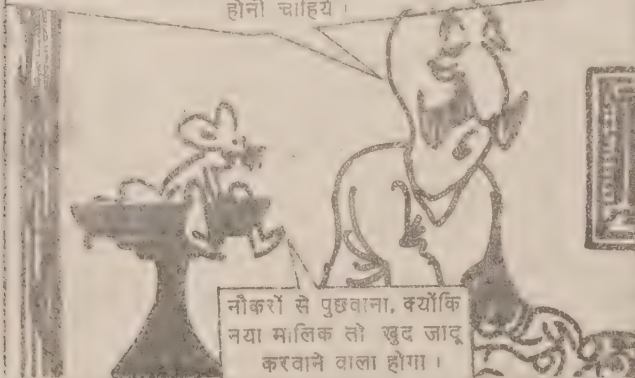
कहीं से कोई खास सूचना नहीं है। आठ में से तीन जगहों से कोई पता नहीं लगा। बाकी पांच जगहों में हर जगह बिजनैस एप्वाइंटमैंट वाले, सर्फ, विम बेचने वाले, पोस्टमैन और प्लम्बर तथा बिजली ठीक करवाने वालों का जिक्र है। एक अजीब चीज चार जगह (कॉमन) एक ही है। कन्ज्यूमर रिसर्च सैंटर वालों की महिला प्रतिनिधि कुछ प्रश्न पूछने आई। टेलीफोन डायरैक्टरी में देखना पड़ेगा कि यह कन्ज्यूमर रिसर्च सैंटर क्या बला है? क्या दिल्ली में भी उनका ऑफिस है?
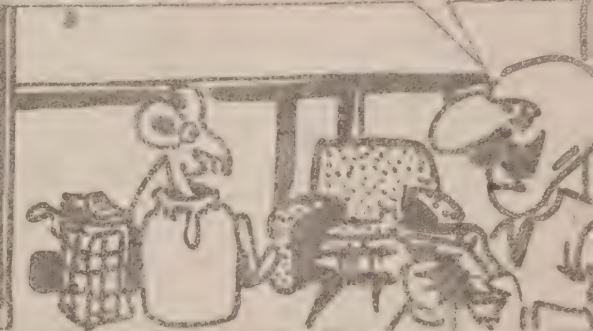
भाई जी मैं पूछ आया कोई खास बात का पता नहीं लगा। बस वही रद्दी हखवार वाले, धूप अगरबत्ती, प्लास्टिक की बाल्टी तथा एक और उपभोक्ता अनुसंधान केन्द्र की कुछ सर्वे के सिलसिले में कुछ सवाल पूछने आयी थी।
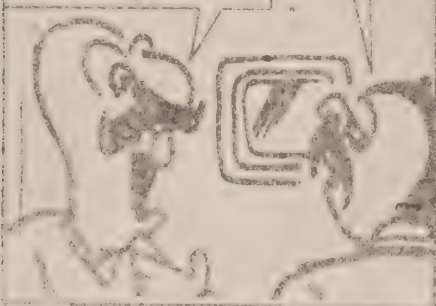
पहले उन सब मरने वालों के पास भी कन्ज्यूमर रिसर्च सैंटर की सर्वेयर आयी थी।
नहीं, नहीं, वह तो उपभोक्ता अनुसंधान केन्द्र की थी।
अरे अंग्रेजी में यही कन्ज्यूमर रिसर्च सैंटर हुआ।
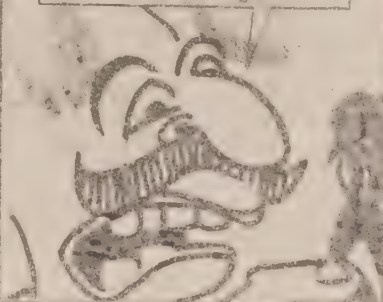
मेरा ख्याल है अब कुछ कुछ रहस्य पर से पर्दा उठता जा रहा है। हमारे सामने आगे बढ़ने का रास्ता खुल गया है। हमारे हाथ में बहुत कीमती सुराग आ गया।
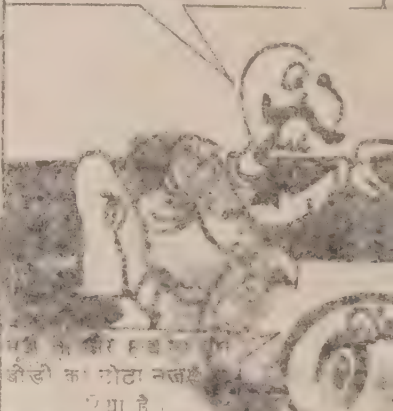
भाई हमारे हाथ में कुछ भी आ गया हो बेचारी रूबी तो बचने से रही। हालत पहले से बहुत खराब हो गई है। मुझे तो देख कर रोना आ गया। अपना भीगा रूमाल वहीं भूल आया हूं। रूबी के बाल उखड़-उखड़ कर जत्थों में गिर रहे हैं। उसने थारा क्या बिगाड़ा था?

अरे जासूस की नाक के बाल, रूबी के बाल ... दूसरे टोने से मरने वालों की मेडिकल केस हिस्ट्री पढ़ी थी उनमें भी यह जिक्र था कि उनके बाल झड़-झड़ कर गुच्छों में गिरने लगे थे। कुछ आया तेरी समझ में? अरे याद कर बंगलौर में हम फोरेन्सिक ट्रेनिंग लेने के लिये गये थे तो वहां जहरों के चैप्टर में क्या सीखा।
थेलियम जहर के प्रभाव से बाल गुच्छों में झड़ने लगते हैं।

डाक्टर साहब, रूबी का आप थैलियम पायजनिंग का इलाज शुरू कर दीजिये... अभी देर नहीं हुई होगी। नहीं-नहीं आपका पैराटाइफाइड का डायगनोसिस नहीं चलेगा। मैं सारी जिम्मेवारी अपने सिर लेता हूं। थैलियम पायजनिंग का इलाज आपने न किया और रूबी की मौत हो गयी तो मैं मुकदमा कर दूंगा।

रूबी के बाल झड़ने की बात से मुझे इस केस से सम्बन्धित सारे मसलों के बारे में बाल झड़ने की रिपोर्ट याद आ गयी। थैलियम जहर ही ऐसा है जो कई भिन्न बिमारियों के लक्षण पैदा करता है। एक ही बात कॉमन होती है वह यह कि बीमार के बाल झड़ते हैं। एनसाइक्लोपीडिया में थैलियम का जिक्र सुनो। एक फैक्ट्री में जो थैलियम का प्रयोग करती थी एक पार्टी के बाद सात व्यक्ति बीमार होकर मरे। सबको अलग अलग बिमारियां हुयीं प्रमुख पैराटाइफाइड, मिरगी, पेट की गैस, न्यूराइटस, पैरालिसस, एपोप्लैक्सी, न्यूराइटिस थे। एक स्त्री ने पांच व्यक्तियों को जहर दिया। बीमारी के लक्षण ब्रेन ट्यूमर, एनसेफेलाइटिस व न्यूमोनिया वगैरह थे। इस जहर में एक विशेषता है वह यह कि विभिन्न व्यक्तियों में विभिन्न बिमारियों के लक्षण उभर आते हैं। एक ही समानता है वह यह कि बाल झड़ते हैं। डाक्टर को जब तक थैलियम [...] का शक नहीं होता वह उभर आई बीमारी के लक्षण [...] इलाज करता जाता है और बीमार मर जाता है। थैलियम कुछ समय पहले तक चूहों को मारने के लिये प्रयोग किया जाता था।

मेरे भाइयों के लिये ऐसा खतरनाक विष।

POISONS

अपराधों का

भाइयों, थमको मुबारक हो! फ्रांस के बैंक ने माथे को पकड़-[...] का जो इनाम रखया था वह थारे को ही मिलेगा। इखबार में लिखा है।

चलो बाढ़ के कारण गुड़गांवे मा हमारे खेतों को जो हानि हुई वह पूरी हो गई। चौधरी चरणसिंह के जन्म दिवस पर जो एक करोड़ की थैली दी जानी है उसमें हम भी पांच दस रुपये चंदा डाल देंगे। लेकिन रूबी को क्या मिलेगा जिसे इस चक्कर में बालों से हाथ धोना पड़ा। रूबी की खोपड़ी भी थारी तरियां साफ हो गयी है।

पिलपिल-सिलबिल के नये कारनामे अगले अंक में पढ़िये।

मोटू–पतलू की जासूसी कहानी

आख़िरी चोट

पिछले दिनों कैबरे डांसर रोजी की हत्या कर दी गई और मोटू-पतलू और चेलाराम इस केस की छानबीन करने लगे। रोजी की सहेली शैली ने उन्हें बताया कि रोजी के सम्बन्ध बड़े-बड़े लोगों से थे। वह शाईकांग नाम के एक खतरनाक जासूस के लिए फौजी और वैज्ञानिक राज चुराने का काम करती थी और ना चाहते हुए भी अब उसके लिए जासूसों के गैंग से निकलना आसान नहीं था। शैली को शक था की रोजी की हत्या शाईकांग ने ही की है। हत्या से पहले रोजी ने एक जर्मन वैज्ञानिक की महत्वपूर्ण फाइलों की तसवीरें एक 'स्पाई कैमरे' से चुराई थीं। उस फिल्म की रील उसने एक खिलौने में छुपा कर शैली को दे दी थी। शायद वह उसे शाईकांग को देना नहीं चाहती थी और शायद उसकी हत्या का कारण भी यही था। जो बाद में शैली से शाईकांग ने हथिया ली थी।

उस रोज चेलाराम ने अपने स्कूटर पर शाईकांग की कार का पीछा किया, तो उसकी कार रेलवे फाटक पर जाकर पता नहीं कहां गायब हो गई। अगले रोज चेलाराम छान-बीन के लिए रेलवे लाइन पर पहुंचा तो उसकी मुठभेड़ शाईकांग के गिरोह से हो गई और चेलाराम पकड़ा गया। अब इस कहानी के अगले हंगामे देखिये !

अब शाईकांग वायरलैस पर अपने साथियों को संदेश दे रहा था
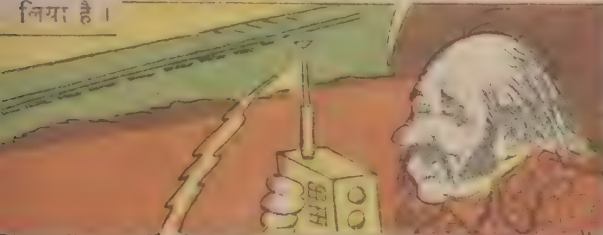
और जैसे ही इंजन का पहिया पटरी पर लगी बारूद की पेटी से टकराया···

एक तेज धमाके के साथ पटरी उड़ गई···
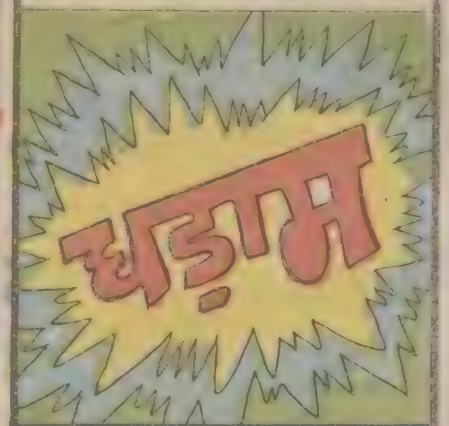
बोगी नं० N. R. 58 देखो

और दूसरे ही पल गाड़ी के डिब्बे एक दूसरे पर चढ़ते चले गये और उल्टकर पटरी से परे जा पड़े।
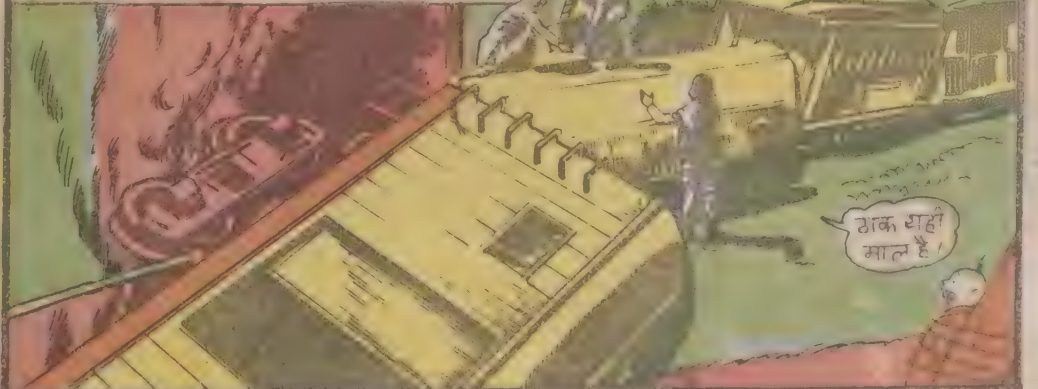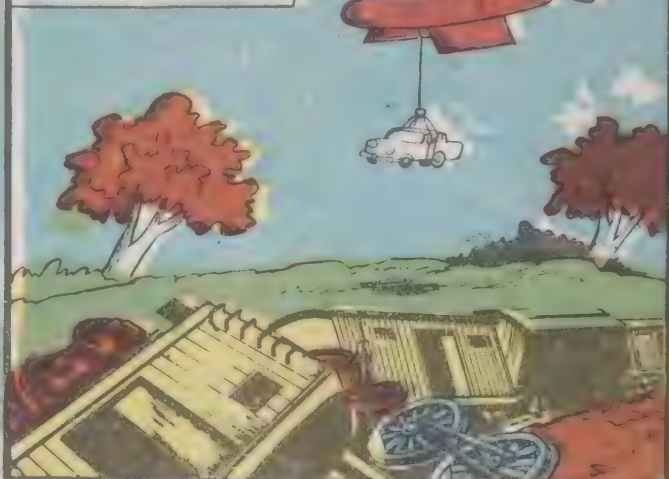
मैं कह रहा हूं मालगाड़ी उलट गई है बहरे। मैंने देखा, उस गाड़ी में कुछ आदमियों ने चेलाराम को जबरदस्ती बिठाया है और उस गाड़ी को वह हैलिकाप्टर अपने पेट में हजम करने वाला है।
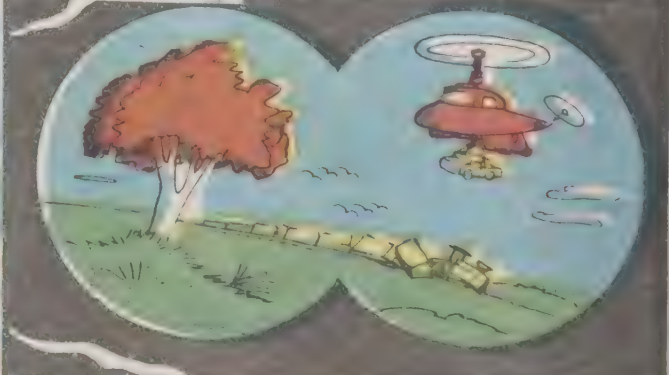
हर गम मरने वाला है ? कैसा गम ? किसका गम ?
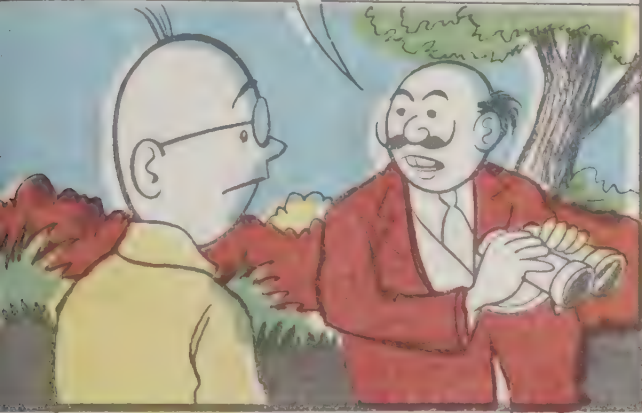
कंट्रोल रूम को इस दुर्घटना की सूचना मिलते ही फायर ब्रगेड और पुलिस दुर्घटना स्थल पर आ गये। गाड़ी के ड्राइवर, फायर मैन और गार्ड सभी मारे गये थे। इस दुर्घटना का कारण बताने वाला वहाँ कोई नही था। हैली-काप्टर में जाने कैसे यंत्र लगे थे कि किसी राडार केन्द्र को उसके आने या जाने का संकेत नहीं मिला था। इसलिए मोटू-पतलू के लाख कहने पर भी किसी ने यह बात नहीं मानी कि षड्यंत्रकारियों के हैलिकाप्टर की खोज करनी चाहिए। अब उनके पास अपने तौर पर ही हैलिकाप्टर और चेलाराम की खोज करने के अलावा और कोई चारा नहीं था। शैली एयर होस्टेस थी। उसके एक धनी मित्र सेठ रामजी पालकी वाला के पास अपना प्राइवेट जहाज था जिसे वह शैली के कहने पर मोटू-पतलू के हवाले करने को तैयार हो गये। सभी सरकारी नियमों का पालन करके और कागजी खानापूरी करके वे हवाई उड़ान भरने के लिए एयरपोर्ट पहुंच गये।
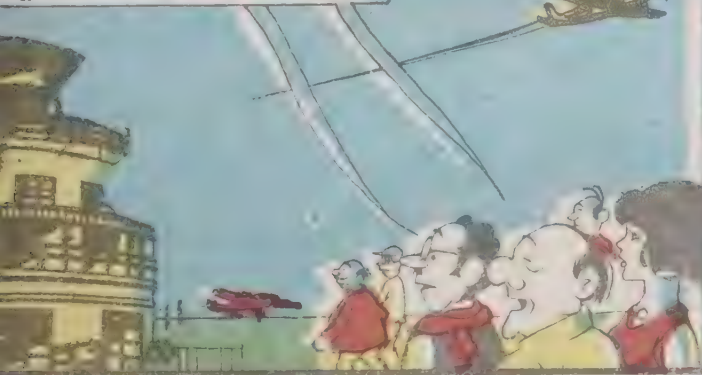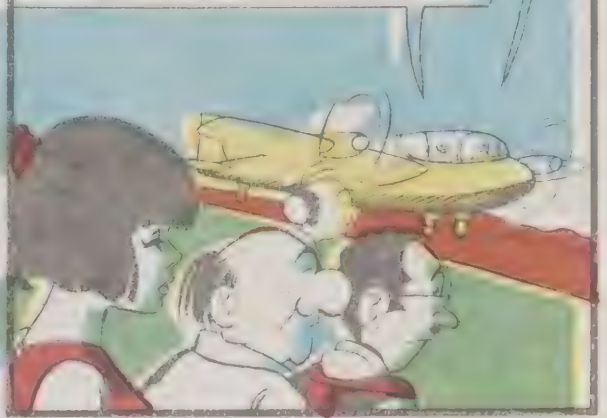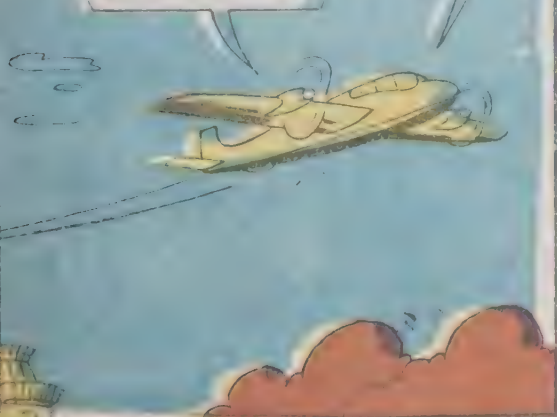
मोटू-पतलू आगे ही आगे बढ़े जा रहे थे ।

एक जगह उन्हें एक मछेरे ने बताया···

हाँ मैंने ऐसा एक हैलिकाप्टर कल देखा था । उसमें से एक क्रेन निकली । उसने समुद्र में से एक किश्ती ऊपर उठाई । वह किश्ती हैलीकाप्टर के अन्दर चली गई । फिर वह हैलिकाप्टर समुद्र के परे किसी टापू की ओर चला गया ।
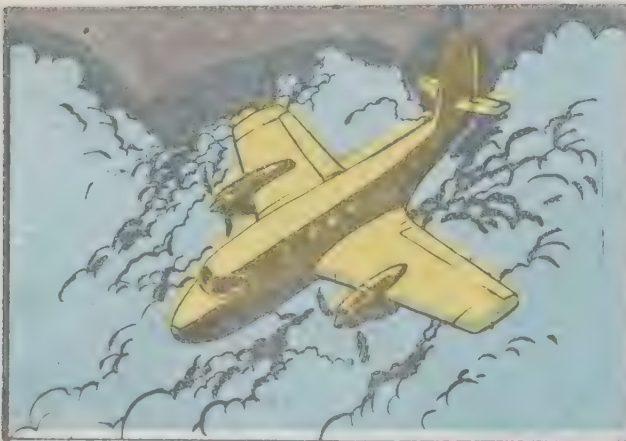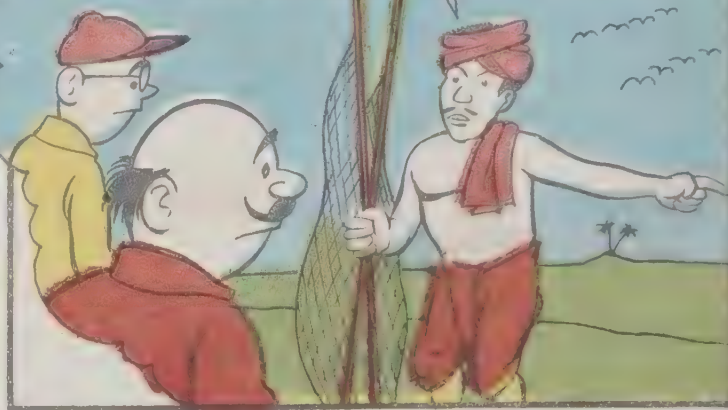
मोटू-पतलू के जहाज में इतना फ्यूल नहीं आ सकता था कि वे समुद्र में बहुत दूर तक जा सकें । फिर भी पास के टापू तक तो वे जा ही सकते थे ।

उड़ते-उड़ते वे समुद्र में बहुत आगे निकल गये तो एक जगह मोटू समुद्र में कुछ देखकर चौंक गया ।
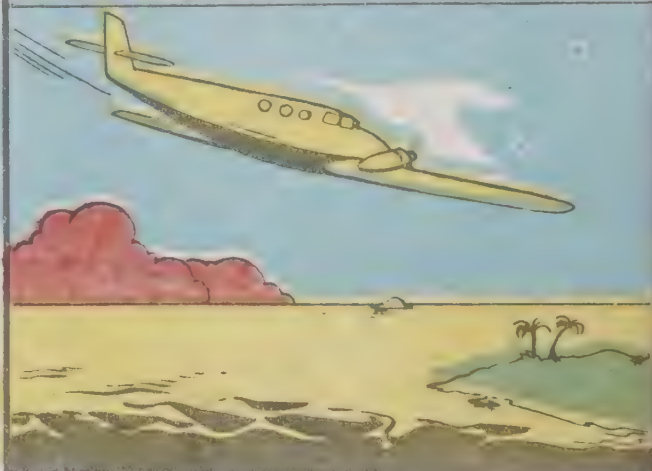
मेरा ख्याल है हम जिसकी खोज में निकले हैं उसका पता लगा लिया है । हमें जहाज और नीचे ले जाकर देखना चाहिए ।
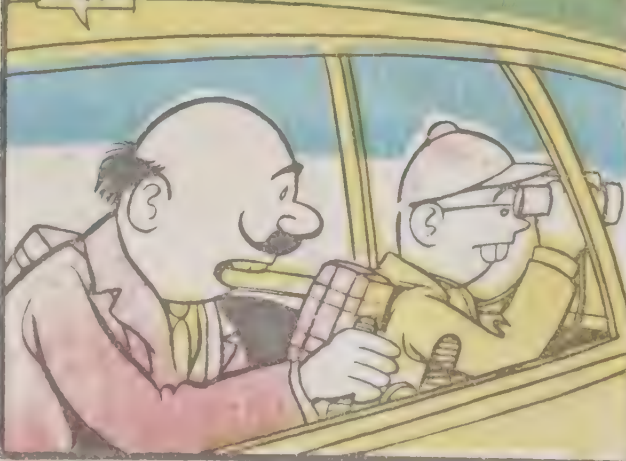
जहाज और नीचे आया तो मोटू का शक हकीकत में बदल गया ।
पानी का जहाज और उस पर हैलिकाप्टर । एक कार और एक किश्ती ! अब लौट चलें ? पुलिस को सूचना दें ?
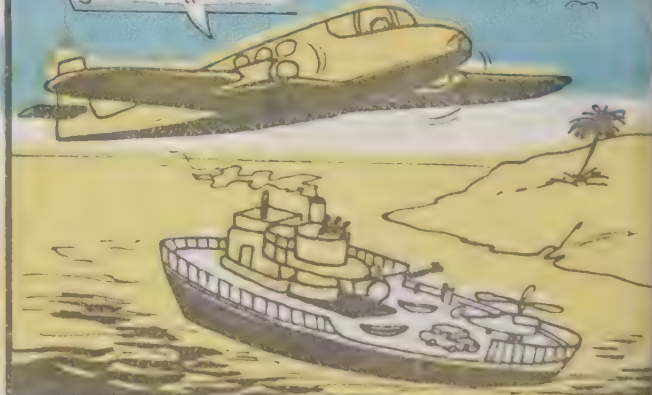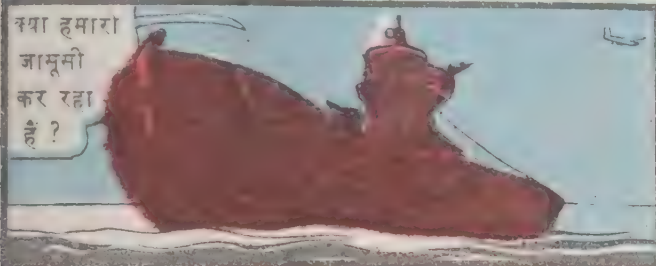
कैसा जहाज है ?

Don't takea chance.
गोली मार कर गिरा दो ।

क्या हमारा जासूसी कर रहा हैं ?

बस, निशाना लगाओ ! रेडी...!! शूट !!!

फायरिंग कर रहे हैं ! जहाज का पर उड़ गया ।
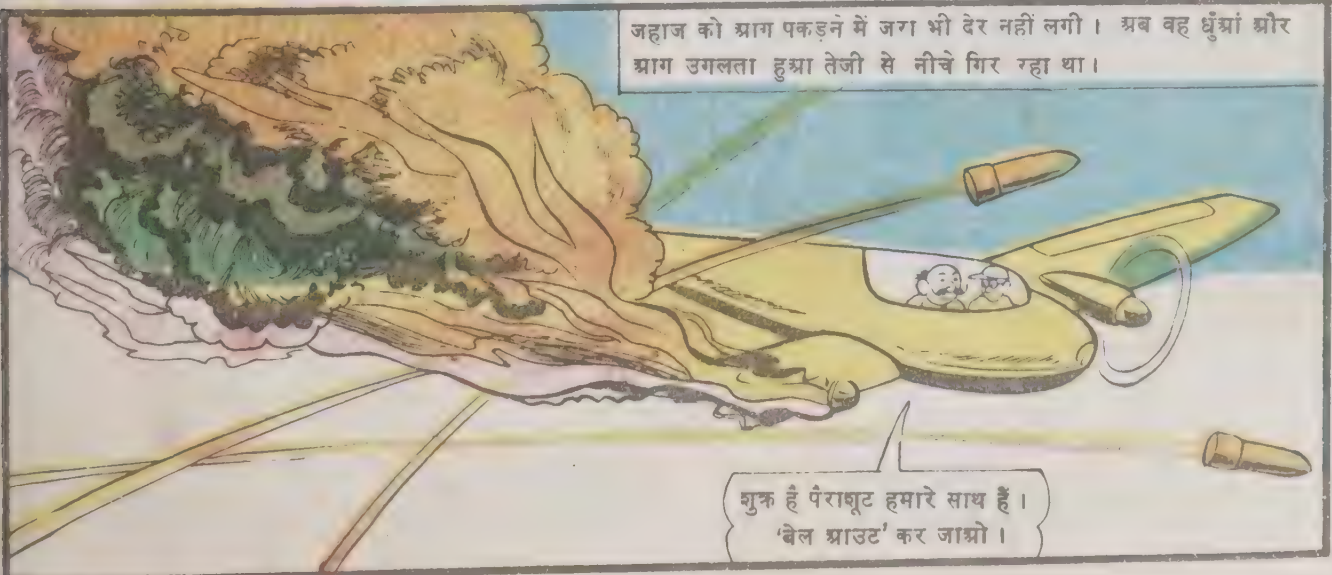
जहाज को आग पकड़ने में जरा भी देर नहीं लगी । अब वह धुंआं और आग उगलता हुआ तेजी से नीचे गिर रहा था।
शुक्र है पैराशूट हमारे साथ हैं । 'बेल आउट' कर जाओ ।

हैलिकाप्टर की खोज करने निकले थे। यह पता नहीं था कि इतनी बड़ी मुसीबत में फंस जाएंगे।
शर्बत पीकर हंस जाएंगे ? तुझे अब भी हंसने की लग रही है। पता नहीं यहां लाया क्यों है हमें ?

जैसा इन कानों को सुनाई दे रहा है उससे तो अच्छा है इनमें गोबर भरकर डाट ठोक ले।
पैराशूट के अन्दर तेज हवा भर गई या अन्दर आंधी आ गई तो क्या होगा ?
इन्दिरा गांधी आ गई ? क्या चिकमगलूर का इलेक्शन देखने आये हैं हम
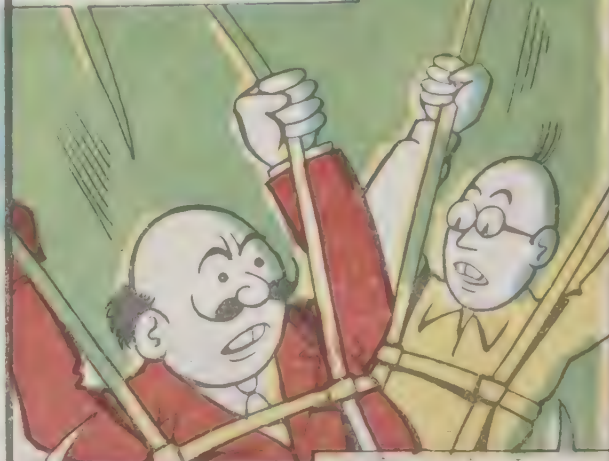
तेरे कानों की कबर खोदने आए हैं हम।

धरती पर पहुंचे तो मोटू-पतलू अलग-अलग जगह जाकर पड़े थे।
पतलू कहां गिरा है ?

वह यहां गिरा था।
अरे मैं कहां मारा गया ? भाइयो, बस इतना बता दो कि मैं दौड़ना चाहूं तो ····· क्या करूं ?

मोटू-पतलू कहां पहुंचे ? चेलाराम का क्या बना ?? इस खतरनाक कहानी का अगला भाग आगामी अंक में देखिये ।

लीजिये, एक और आंखों का अंधा हाजिर है। दीवाना में अब नई खलबली मचाने आया है।

बच्चा झमूरा और पप्पी बटूरे का नया साथी

कनखजूरा

वस थोरे ते पत्ते और तातने हैं। तबी आँथों ता तम्पीतीसन हुआ तो मैं बी द्राऊंदा। तुम बरे थुन्दर और ब्युतीफुल लद रे ओ तम्पीतीसन ते लिये। होस्तल ती लरतियां देथेंदी तो दंद रै दायें दी।

आगामी अंक में इन कलाकारों से फिर मिलिये।

महिला विश्व कप हॉकी

हाल में ही मैडिड में सम्पन्न हुये महिला विश्व कप हॉकी में विभिन्न देशों की स्थिति निम्न प्रकार से रही ।

१. हॉलैंड
२. जर्मनी
३. अर्जेन्टीना तथा बैल्जियम (संयुक्त रूप से) ।
५. कनाडा
६. जापान
७. भारत
८. स्पेन
९. चैकोस्लोवकिया
१०. नाइजीरिया

भारत का प्रदर्शन निम्न स्तर का क्यों रहा ?

भारतीय टीम जिसने अच्छा खासा समय पटियाला खेल संस्थान में अभ्यास और कोचिंग में लगाया केवल सातवां नम्बर पा सकी । टीम की कप्तान रूपा सैनी थी । एक कारण आस्ट्रो टर्फ पर खेलने का अभ्यास न होना भी था । टर्फ पर कई बार पानी का छिड़काव न होने के कारण टर्फ गर्म हो गया व रबड़ के बूट जो ऐसे मैदान पर खेलने में प्रयोग किये जाते हैं गलने लग गये । हमारे कई खिलाड़ियों के पैरों में छाले तक पड़ गये । एक दूसरा कारण खाना भी था वहां केवल टिन बंद खाना उपलब्ध था । भारतीयों को ऐसे खाने की आदत नहीं है । फलस्वरूप हमारे खिलाड़ी प्रायः भूखे ही रहते थे व वहां जलवायु [illegible] ठंड बहुत थी । कहा [illegible] [illegible]िंग भी दोषपूर्ण थी ।

भारतीय महिला क्रिकेट [illegible] सियेशन का लज्जास्पद [illegible]

लीजिये साहब, और खेलों में भी अधिकारी धांधले बाजी चलाते ही हैं । खिलाड़ियों का हर मौका मिलने पर अपमान करते रहे हैं । अब महिला क्रिकेट एसोसियेशन काउंसिल के मेम्बर भी पीछे नहीं र[illegible] । अय- पुर कोचिंग कैम्प के दौरान काउंसिल की मीटिंग में खिलाड़ियों के अभियान की मांग पर उनके भी एक प्रतिनिधि को मीटिंग में उपस्थित रहने की अनुमति दी गयी । प्रतिनिधि के रूप में चोटी की खिलाड़ी शांता रंगास्वामी गयीं । मीटिंग में मैम्बरों ने बातों ही बातों में जहर में बुझे तीर छोड़ कर शांता का अपमान करना शुरू कर दिया । शांता रंगास्वामी को वाक आउट करना पड़ा और उसके बाद सब खिलाड़ियों ने का[illegible] पहने ।

कृष्ण प्रसाद बरनवाल—भागा बाज़ार

प्र० : विदेशों में भारत का सबसे लोकप्रिय क्रिकेट खिलाड़ी कौन-सा है ?

उ० : बिशन सिंह बेदी ।

श्याम प्रकाश पुरोहित—किशनगढ़

प्र० : 'ब्यूनस आयर्स' के पहले विश्व कप कौन से सन् में व कौन से देश के कौन से नगर में हुए थे ?

उ० : १९७२,७४, व ७६ में क्रमशः यह मैच बारसीलोना स्पेन, एमसटरडम हॉलैंड तथा कुआलालुम्पुर मलेशिया में हुए ।

धर्मपाल—कानपुर (म. प्र.)

प्र० : प्रसन्ना की कुल कितनी विकेटें हैं ? उनका सर्वाधिक स्कोर कितना है ?

उ० : १८७ विकेटें

जब्बार—बीकानेर

प्र० : बिशन सिंह बेदी की कितनी उम्र है ?

उ० : ३२ वर्ष ।

राजेश जे. गांधी—बम्बई

प्र० : विश्व में सबसे पहला खेल कौनसा [illegible] गया और [illegible] ?

उ० : [illegible] के खेल ईसा से पूर्व [illegible] में खेले जाते थे ।

[illegible] कुमार—दिल्ली

प्र० इस समय क्रिकेट के विश्व में भारत की क्या स्थिति है ? उसका कौनसा स्थान है ?

उ० भारत का स्थान इंगलैंड [illegible] इंडीज, आस्ट्रेलिया तथा पाकि[illegible] ही है ।

अर्जुन लाल नेभानी—रायपुर (म. प्र.)

प्र० : भारतीय टीम के भूतपूर्व कप्तान डी. के. गायकवाड़ का टेस्ट रिकार्ड क्या है ?

उ० : ११ टेस्ट मैच, २० इनिंग्स, ३५० रन, उच्चतम स्कोर ५२, ५ कैच ।

सुकुमार साहा 'मिटू'—चास (धनबाद)

प्र० : [illegible] में क्रिकेट खेल का कब से प्रचलन हुआ [illegible] टेस्ट किसके विरुद्ध कहां [illegible] था तथा उसका परिणाम ?

उ० : भारत में क्रिकेट का विधिवत टेस्ट मैच १९३२ से शुरू हुआ । इंगलैंड के विरुद्ध खेले गये प्रथम टेस्ट लार्डस में भारत हार गया था ।

मोहन लाल भाटिया—हैद[illegible]

प्र० : अगर किसी क्लब मेम्बर को क्रिकेट टीम से निकाल दिया [illegible] और किट उसके पास हो और वह न दे [illegible] क्या एक्शन लिया जाना चाहिए ?

उ० : क्रिकेट क्लबों के अपने-अपने नियम होते हैं जो [illegible] क्रिकेट क्लब का नियम या रिवाज [illegible] होगा ।

सैयद अब्दुल जब्बार [illegible] स्ताना—बीकानेर

प्र० : भारत [illegible] ट्रेलिया १९७७-७८ शृंखला में किस [illegible] ड़ी ने व्यक्तिगत सर्वाधिक रन बनाए ?

उ० : भारत के लिये विश्वनाथ ने व आस्ट्रेलिया के लिए बॉबी सिम्पसन ने ।

मदनलाल होतवानी—रायपुर (म. प्र.)

प्र० : भारत की ओर से दोहरा शतक लगाने वाले खिलाड़ी का नाम बतायें और इन्होंने यह शतक कब और किस टीम के विरुद्ध लगाया ?

उ० : विजय हजारे ११६ और १४५ एडलेड में १९४७-४८ सरदेसाई २१२ और २०० त्रिनीडाड टैस्ट १९७१ ।

खेल-खेल में
दीवाना साप्ताहिक
८-बी. बहादुरशाह ज़फर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२

हाकी कैसे खेलें

ड्रिब्लिंग

हाकी खेल की सबसे सुन्दर कला है ड्रिब्लिंग। ड्रिब्लिंग द्वारा गेंद को आगे बढ़ने की कला में खिलाड़ी को अच्छे-खासे अभ्यास की जरूरत होती है। जो खिलाड़ी ड्रिब्लिंग का अच्छी तरह अभ्यास कर ले, वह विपक्षी खिलाड़ियों से गेंद को आसानी से बचा कर निकालता हुआ ले जा सकता है।

ड्रिब्लिंग के लिए कलाई लचकदार होनी चाहिए। साथ ही स्टिक की पकड़ भी ऐसी होनी चाहिए कि हाकी को दायें-बायें फिराने में मुश्किल न हो। ड्रिब्लिंग तब तक करते हुए बढ़ते रहना चाहिए जब तक आप हिट या पास द्वारा गेंद अपने साथी को देने की स्थिति में न आ जायें। याद रखें ड्रिब्लिंग द्वारा गेंद ले जाते हुए गति तेज होनी चाहिए धीमी गति से ड्रिब्लिंग पर विपक्षी की नजर जम सकती है और वह स्टिक डाल कर गेंद छीन सकता है।

ड्रिब्लिंग में स्टिक को इस तरह पकड़ा जाता है कि उसके मुड़े हुए सिरे को अपनी ही जगह रखते हुये दायीं-बायीं ओर आड़ी-तिरछी कर गेंद को कलाबाजी खिलाते हुए ले जायें। ड्रिब्लिंग का फायदा तभी है जब आप अधिक से अधिक दूरी को कम से कम समय में तय कर सकें। गेंद को ज्यादा समय तक भी अपने पास रखना ठीक नहीं होता।

अभ्यास करने के लिए तथा ड्रिब्लिंग की सही ढंग से सीखने के लिए स्टिक के ऊपरी सिरे को बायें हाथ से पकड़ें तथा दायां हाथ बायें हाथ की पकड़ से तीन इंच नीचे हो। दायें हाथ में स्टिक को सहारा देते हुए बायें हाथ से स्टिक को गेंद के दायीं ओर ले जाकर उसके मुड़े हुए सिरे के छोर से रैपिंग करें फिर फुर्ती से बायीं ओर ले आकर दायीं दिशा में गेंद ले जाने के लिए सिरे के छोर से फिर रैपिंग करें। इस प्रकार गेंद बजाय सीधी लुढ़कने के कभी दाईं ओर लुढ़केगी कभी बायीं ओर—और इस तरह दायें-बायें लुढ़कते हुए गेंद आगे बढ़ती रहेगी। याद रखें गेंद दायें-बायें होती हुई आगे बढ़ती रहे लेकिन स्टिक उसके बिल्कुल पास ही रहे ताकि खतरा सामने आते ही आप उसे फौरन ही कोई बचाव की दिशा में घुमाने के लिए तत्पर रह सकें। लेकिन स्टिक गेंद के इतने पास भी न हो कि वह गेंद का स्पर्श करे। इससे ड्रिब्लिंग की तेज गति में बाधा पड़ सकती है।

जैब

जैब स्ट्रोक का प्रयोग स्टिक को एक हाथ में पकड़कर किया जाता है। जैब करते समय स्टिक दायें या बायें किसी हाथ में ली जा सकती है।

इस स्ट्रोक का प्रयोग मुख्य रूप से उस समय किया जाता है जब विपक्षी खिलाड़ी भी गेंद छीनने के उद्देश्य से साथ-साथ आगे बढ़ रहा हो और आप गेंद को हथियाने उस स्थान तक पहुँचने में असमर्थ हों और आपकी वहां तक पहुंच न हो पा रही हो। तब स्टिक को एक हाथ में लेकर हाथ लम्बा कर गेंद तक स्टिक पहुंचा कर उसे आगे बढ़ा देते हैं—इसी को जैब स्ट्रोक कहा जाता है। इसमें एक तरह से गेंद को धकिया दिया जाता है।

इसके अभ्यास के लिए खिलाड़ी को चाहिए कि वह बायें या दायें किसी भी हाथ से स्टिक को पकड़कर सीधी फैला ले और दौड़ती हुई गेंद को आगे धकेलने का प्रयत्न करे।

इसी प्रकार जैब का रिवर्स-स्ट्रोक का भी अभ्यास करें। जैब का अभ्यास दायें-बायें दोनों हाथों से समान रूप से करना चाहिए।

लंज

जैब की तरह 'लंज' भी एक हत्था स्ट्रोक होता है जैब और लंज स्ट्रोक में कोई बहुत अन्तर नहीं है जो खिलाड़ी जैब स्ट्रोक सीख ले, उसे लंज स्ट्रोक लगाने में कोई दिक्कत नहीं होती। जैब और लंज का तरीका लगभग एक सा ही होता है। अंतर सिर्फ इतना है कि जब गेंद ले जाता हुआ कोई खिलाड़ी आपकी पहुंच-सीमा से दूर हो तो एक हाथ लम्बा कर स्टिक को बिल्कुल सिरे से पकड़ कर जैब-स्ट्रोक की तरह ही आगे बढ़ाते हुए गेंद को रोकने या अपने किसी अन्य साथी की ओर बढ़ा देने के लिये गेंद तक लंज द्वारा स्टिक पहुंचा कर उसे काबू में किया जा सकता है या विपक्षी से गेंद छीनी जा सकती है।

गेंद रोकना

ऊपर दिये गये सारे स्ट्रोकों में दक्ष होने के साथ-साथ यदि खिलाड़ी गेंद रोकने में कमजोर है तो ये सारे स्ट्रोक सीखने का कोई लाभ नहीं है।

हिटिंग, पुशिंग, ड्रिब्लिंग, स्कूप, फ्लिक या जैक किसी भी स्ट्रोक द्वारा तेजी से आती गेंद को विश्वासपूर्वक रोक कर फिर ड्रिब्लिंग, पुशिंग, स्कूपिंग या अन्य किसी स्ट्रोक का उपयोग करते हुए बढ़ा ले जाने पर ही आप पूर्ण खिलाड़ी बन सकते हैं। किसी भी स्थिति में गेंद आ रही हो—आपको उसे रोक कर नियंत्रण में लाना चाहिए।

(क्रमशः)

प्र० : पारा क्या है तथा इसे हाथ में क्यों नहीं पकड़ा जा सकता ?

महेश कुमार शर्मा—आसाम

उ० : पारा एक धातु है इसे क्विक सिल्वर के नाम से पुकारा तथा जाना जाना है। पारा ही केवल ऐसी धातु है जो कि साधारण तापमान पर तरल रूप में पाया जाता है। इसके अनोखे बहने के ढंग तथा रूपहरी रूप के कारण ही इसे क्विक सिल्वर कहा जाता है।

पारा ३८ डिग्री फेरनहीट पर जम जाता है तथा ६३५ डिग्री फेरनहीट पर उबलता है। ये पानी से १३.६ गुणा भारी होता है। इसकी सतह की लचक ऐसी अनोखी होती है कि ये अधिकतर वस्तुओं को गीला नहीं करता अपितु छोटी-छोटी गोलियों में टूट कर लुढ़क जाता है।

प्रकृति में ये अधिकतर लाल धातु सिगरिफ या गेरू के साथ मिश्रित पाया जाता है सिगरिफ चट्टानें बहुत स्थानों पर पाई जाती हैं परन्तु अधिकतर ये चट्टानें ज्वालामुखी फटने पर बनी होती हैं क्योंकि ये चट्टानें ज्वालामुखी के फटने के कारण निक्षेपित समझी जाती हैं।

पारे को भाप के रूप में सरलता से बदला जा सकता है। कच्ची धातु से पारा अलग करने के लिए धातु को ५०० डिग्री फेरनहीट तक गर्म करना आवश्यक है, इस भाप को ठंडा कर पारा ग्रहण कर लिया जाता है।

आधुनिक युग में पारा कई प्रकार काम में लाया जाता है, परन्तु इसका सबसे अधिक प्रयोग औषधीय कार्यों में होता है। इन कार्यों में संसार में उपलब्ध समूचे पारे का लगभग एक तिहाई भाग प्रयुक्त होता है। पारा के कम्पाउण्ड विषैले होने पर भी इन कार्यों में प्रयुक्त होते हैं। औषधियां तथा रोगाणुनाशी चीजें बनाने में भी इसका प्रयोग बहुतायत से होता है। पारे के उपयोग जो सबसे अधिक जाने जाते हैं, वो हैं थरमोमीटर तथा बेरोमीटर बनाना। पारे की भाप को भरकर ट्यूब या मरकरी लाइट भी बनाई जाती है जो रोशनी के काम आती हैं।

प्र० : संसार में शब्दकोष कब और कहां सबसे पहले बना ?

उ० : शब्दकोष अथवा डिक्शनरी प्रायः एक भाषा के अनेक शब्दों का संग्रह होता है जिनमें उन शब्दों के अर्थ उच्चारण तथा प्रयोग के बारे में बताया जाता है। अधिकतर ये शब्द वर्णानुक्रम में लिखे जाते हैं।

अजीब बात ये है कि ऐसे संग्रह के विचार को ही बढ़ने में कई सौ वर्ष का लम्बा समय लगा। सबसे पहले सन् १२२५ में लैटिन भाषा के विकास के लिए शब्दकोष बना था। इस भाषा के कुछ स्मरण करने योग्य शब्दों को एकत्रित करके इस शब्दकोष को बनाया गया था। इस लैटिन भाषा के शब्दकोष को अंग्रेजी के प्रचलित शब्द डिक्शनरी के नाम से ही जाना गया था। लैटिन के शब्द डिक्शनेरियस जिसका अर्थ है, शब्दों का संग्रह ही इस विशेष नाम का प्रेरक है।

पन्द्रहवीं शताब्दी में अंग्रेजी भाषा के शब्द भी इन संग्रहों में दिखाई देने लगे, पर अभी भी इसका नाम लैटिन भाषा से ही था, इस संग्रह को लैटिन भाषा को पढ़ने में सहायता के उद्देश्य से ही बनाया गया था परन्तु लैटिन के साथ-साथ ये अंग्रेजी पढ़ने वालों के लिए भी उपयोगी साबित हुआ। इसके बाद अंग्रेजी भाषा के ज्ञान के लिए, अंग्रेजी के शब्दों के अर्थ अंग्रेजी भाषा में ही वाला संग्रह डिक्शनरी के नाम से ही बना। ये प्रथम अंग्रेजी का शब्दकोष रिचर्ड हुलोट नामक व्यक्ति द्वारा संग्रहित किया गया था। इनका स्वभाव काफी मजाकिया था क्योंकि इन्होंने शब्दों के अर्थों को भी एक हास्य रूप देने का प्रयास किया था।

धीरे-धीरे इस प्रकार और संग्रह दिखाई देने लगे, कुछ तो लेखक द्वारा किसी विशेष विषय के कुछ हजार शब्दों को संग्रहित कर ही बनाये गये थे। इस ही प्रकार का एक शब्दकोष वर्णानुक्रमिक न होकर, शब्द की अन्त ध्वनि पर आधारित था इस तुकबन्दी शब्दकोष कहा जाता था इस शब्दकोष का मुख्य ध्येय कवियों की सहायता करना था।

वास्तव में आरम्भ में शब्दकोष का संग्रह करने वाले हर साधारण शब्द को उसमें शामिल करने का प्रयास ही नहीं करते थे, वे तो केवल कठिन शब्दों के अर्थ बताकर संतुष्ट थे। इस समय से ही अंग्रेजी भाषा की आधुनिक डिक्शनरी का संग्रह आरम्भ हुआ था जिसमें अंग्रेजी भाषा के लगभग सभी शब्द मिलते हैं। इस संग्रह की उपयोगिता को देखते हुए हर भाषा को जानने तथा पढ़ने के लिए शब्दकोष बनने लगे। आज कोई भी ऐसी प्रचलित भाषा नहीं होगी, जिसमें अच्छे शब्दकोष न मिलें।

प्र० : विवाह कार्य के समय वर वधू पर चावल क्यों छिड़के जाते हैं ?

उ० : विवाह कार्य के समय वर वधू पर चावल छिड़कने की प्रथा केवल भारत में ही नहीं अपितु सारे संसार में प्रचलित है। विवाह कार्य जीवन की अन्य विशेष घटनाओं के समान विशेष प्रतीकों से पूर्ण रूप से भरा है अर्थात हम कुछ रीति-रिवाजों का पालन करते हैं जिनके द्वारा हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हैं।

चावल या धान के प्रयोग की प्रथा भी इन्हीं भावनाओं का प्रतीक है। विवाह बन्धन के अवसर पर चावल का प्रयोग कई सौ वर्षों से किया जाता है। जैसे कुछ आदि जातियों में वर-वधू का साथ बैठकर चावल खाना ही विवाह की रस्म समझा जाता था। सम्भवतः इस साथ खाने को साथ रहने का ही प्रतीक मानते होंगे तथा उस समय चावल ही उनका प्रादेशिक भोजन होता था। कुछ अन्य जातियों में वर-वधू द्वारा चावल साथ खाने के बाद, चावल ही उन पर छिड़के भी जाते थे।

परन्तु इससे भी अधिक चावल का महत्व इसलिए है क्योंकि चावल अथवा धान को हम उपजाऊता का प्रतीक समझते हैं तथा विवाह के समय वर-वधू पर चावल छिड़क कर हम वर-वधू की सम्पन्नता तथा बढ़ोत्तरी की कामना करते हैं अर्थात चावल छिड़क कर हम वर-वधू को धन धान्य तथा संतान पाने का आशीर्वाद देते हैं।

क्यों और कैसे ?

दीवाना साप्ताहिक

८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,

नई दिल्ली-११०००२

स्वेटरों का दीवाना उधेड़बुन

हर जगह स्वेटरों की बुनाई का कार्यक्रम चलने का फल यह होता है कि उस विशेष वातावरण का प्रभाव स्वेटरों के डिजायनों में झलक आता है। स्वेटर देखते ही आप बता सकते हैं कि यह स्वेटर कब और कहां बुना गया था। हमारे फीचर का यही विषय है। आप भी हमारे साथ स्वेटरों का पोस्टमार्टम कीजिये।

यह स्वेटर श्रीमती ने दफ्तर में बुना। स्वेटर पर टाइपराइटर के कीज की झलक देखिये।

और यह क्रिकेट कमैंट्री सुनते-सुनते बुना गया स्वेटर।

यह रेल यात्रा के समय बुना गया है जब सारा परिवार जम्मू-काश्मीर गया था। बार्डर पर रेल पटरियों की छाया देखिए।
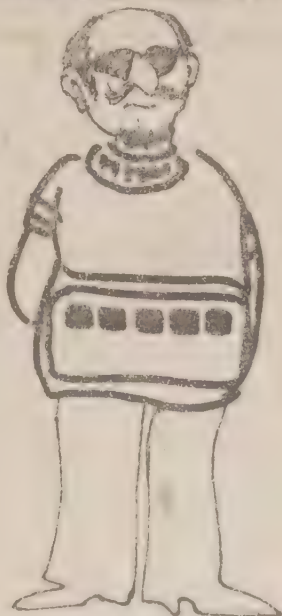
यह तो साफ ही है कि यह स्वेटर बस की इन्तजारी करते समय बुना गया था।

यह स्वेटर उस दिन बुना गया जब सुबह पतिदेव के दफ्तर जाने से पहले उनसे झगड़ा हुआ था।

और यह स्वेटर तब जब श्रीमती जी थोड़ी-थोड़ी बीमार थीं। सामने हमेशा मिक्सचर की शीशी रहती थी और परिणाम स्वरूप स्वेटर पर डोज डिजायन।
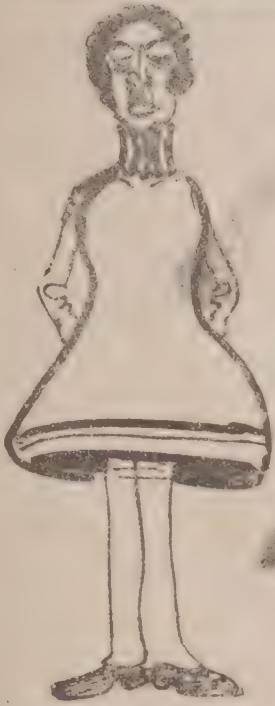
यह स्वैटर निःसंदेह श्रीमती जी ने उस समय बुना जब वह मंदिर में कथा सुन रही थीं। मन्दिर के घंटे का प्रभाव देखिये।

यह उस दिन जब मियां ओवर टाइम करते दफ्तर में लटके रह गए और श्रीमती जी इन्तजार करते-करते स्वैटर बुनती रहीं। आखिर चांद भी निकल आया था।
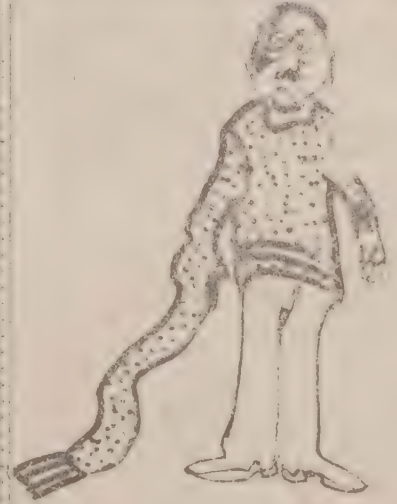
और यह स्वैटर उस समय बना जब श्रीमती जी की गपोड़ी सहेली मिसेज वर्मा पड़ौस के बाबू आत्माराम की बड़ी लड़की कांता के नत्थू हलवाई के लड़के परसराम के साथ भागने की खबर लेकर आई थीं। उस समय वह दांयी बांह बुन रही थीं वह यह चटपटी खबर सुनने में ऐसी खोईं कि…

यह स्वैटर बाबू रामलाल के लड़के की शादी पर जो रिसेप्शन हुआ था उसी समय बुना गया था। देखिये शामियाने का डिजायन स्वैटर पर आ गया है।
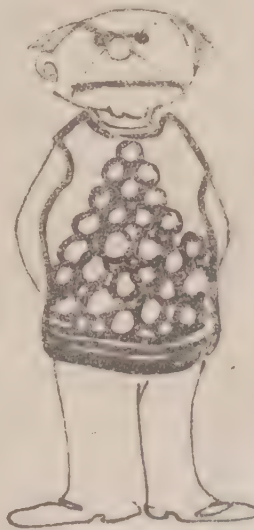
यह श्रीमती जी ने भगवती मां के जागरण में बुना था। स्वैटर पर लड्डुओं के थाल का अक्स देखिये। दरअसल सारे समय उनकी नजर उसी थाल पर टिकी रही।

और यह स्वैटर तब जब मियां ने आकर बताया था कि वह सारी तनख्वाह जुऐ में हार आये हैं। मियां को खरी खोटी सुनाते-सुनाते खुद स्वैटर बुनती रहीं।

ट्रेनिंग सेन्टर

हुकम चन्द 'पक्षी'

अगर आप बेरोजगार हैं, तो सरकार पर निर्भर मत रहिए। यहाँ तो रोजगार पाते-पाते आपको दस वर्ष लग जायेंगे। मगर हम आपको केवल एक दिन की ट्रेनिंग के बाद ही हाथों-हाथ नौकरी और रातों-रात माला-माल कर सकते हैं। आप पूछेंगे वो ऐसा धंधा क्या है ? जनाब ये धंधा क्या है, बस समझिए आपने नोट बनाने का ठेका ले लिया। इस उद्योग में सरकार से मंजूरी लेने की भी आवश्यकता नहीं है। सब से मजे की बात तो ये है कि इसमें पुलिस के सिपाही का भी कोई डर नहीं है। तो आइए हमारे ट्रेनिंग सेन्टर में आ जाइए और सीखिए 'सफल ज्योतिषी कैसे बनें ?' आप सुनते ही घबरा गए होंगे कि ज्योतिषी बनने के लिए तो बड़ी-बड़ी विद्या चाहिए। नहीं साहब हमारे यहां पाँचवी फेल-दूसरी पास तथा हरुफ-शिनाख्त सब ज्योतिषी बन सकते हैं। हमारे यहां संस्कृत, ज्योतिष विज्ञान और मनोविज्ञान आदि का अध्ययन जरूरी नहीं है; हम तो कुछ गुर सिखाते हैं और ज्योतिष से सम्बन्धित कुछ नई तकनीक। तो आइए आज आपको सिखायें 'सफल ज्योतिषी कैसे बनें ?'

सबसे पहले ज्योतिषी जी की वेश-भूषा पर ध्यान देना होगा। या तो आप जटा रखा लीजिए या फिर सर को बिल्कुल ही घोटम घोट कर लीजिए। एक ध्यान रखना है कि घोटम घोट सर के बीच मोटी और लम्बी चोटी अवश्य लहराती हुई होनी चाहिए। जुल्फें संवारने वाला व्यक्ति इस पेशे में ज्यादा सफल नहीं हो सकता। मस्तक पर चन्दन आठों पहर पुता रहना चाहिए। एक बात और है हट्टा कट्टा और मोटा ताजा व्यक्ति इसमें कम सफल होता है क्योंकि लोग उसे ज्योतिषी कम मुस्टन्डा अधिक समझते हैं।

इस धंधे में ज्यादा साज-सामान की भी आवश्यकता नहीं है। कुछ खास सामान जैसे काष्ट का हाथ, एक कंकाल, कुछ मोटी-मोटी किताबें तथा आठ-दस पोथी-पत्रे आपने पास होने चाहियें, भले ही आप उनमें से एक को भी देखना न जानते हों। आजकल तड़क-भड़क का जमाना है; अतः नाम का एक सुन्दर बोर्ड, डिग्रियां और उपाधियां लिए हुए सामने ही लटका हुआ होना चाहिए। घबराने की कोई बात नहीं ये डिग्रियां सब जाली हो सकती हैं। दूसरे जन्म-पत्री देखते समय पोंगा-पण्डित का पूरा ढोंग रचना चाहिए। जैसे जूते बाहर निकलें, हाथ गंगा जल से धोयें, उत्तर की तरफ मुंह करके बैठें तथा हाथ की घड़ी खोलकर रख दें क्योंकि इसमें चमड़े का पट्टा है।

तीसरे दुकान लगाकर हमेशा ऐसे स्थान पर बैठे जहाँ से मुसीबत के क्षणों में गायब होने में ज्यादा समय न लगे क्योंकि हमारे ट्रेनिंग-सेन्टर से निकला हुआ व्यक्ति एक स्थान पर ही स्थायी रूप से नहीं जम सकता क्योंकि हमारे सेन्टर पर आपको सचल ट्रेनिंग दी जाएगी। अब हम कुछ खास गुरों का नीचे वर्णन कर रहे हैं।

नं० १—ज्योतिष विद्या का महान गुर है कि आपके पास जो भी हाथ या जन्म कुंडली दिखाने आए उससे तुरन्त कहिए, 'आप बहुत परेशान हैं और आपका मन हमेशा उद्विग्न रहता है।' इतना कह कर आगे मत बढ़िए पहले इसी बात की हामी भरवा लीजिए क्योंकि सीधी बात है; अच्छा-खासा-खाता-पीता कोई भी व्यक्ति ज्योतिषियों के चक्कर में नहीं पड़ता। परेशान व्यक्ति ही ज्योतिषियों पर विश्वास करते हैं।

नं० २—बेबूझ ८० प्रतिशत व्यक्तियों से कह दीजिए, 'कि साहब आपने सबके साथ भला किया मगर आपके साथ ज्यादातर लोगों ने दगा किया है। हाँ या नहीं !!' हामी अवश्य भरवा लीजिए। निश्चय ही वह व्यक्ति ये नहीं कह सकता कि मैंने किसी के साथ भला नहीं किया और आजकल लोग दगा करते ही हैं।'

नं० ३—एक बात चाहें जिससे कह दीजिए, 'कि साहब आप कमाते खूब हैं मगर आपके हाथ में पैसा रुकता नहीं है। आप कुछ ज्यादा खर्चीले हैं।' आप देखेंगे ज्यादातर लोग आपसे तुरन्त सहमत हो जायेंगे क्योंकि महंगाई के जमाने में ऐसा हर व्यक्ति के साथ होता है।

नं० ४—कुछ सामान्य घटनायें इस प्रकार की होती हैं कि लगभग सबके साथ ही—न्यूनाधिक रूप से घटित होती रहती हैं जैसे आप पचहत्तर प्रतिशत व्यक्तियों से कह सकते हैं, 'कि साहब आप दिल के तो बड़े नेक और मजबूत रहे हैं मगर परिस्थितियां आपकी बड़ी विकट रही हैं। आपके जीवन में दो मौ बड़े खतरनाक और कष्टप्रद आए हैं मगर आपने बड़ी मजबूती से उनका सामना किया है। अभी जीवन में एक और झटका ऐसा ही आएगा। एक बार आप इतने सख्त बीमार हुए हैं कि बस मर-मर के बचे हैं।' ये हम सब जानते हैं कि जीवन में मुसीबत भी आती ही है और प्रत्येक व्यक्ति एक-आध बार सख्त बीमार भी होता है।

नं० ५—आप ज्यादा-से-ज्यादा व्यक्तियों से निःसंकोच कह सकते हैं, 'कि आपके घर से उत्तर-पूर्व के दक्षिण भाग में पश्चिम का

शेष पृष्ठ ...

घोर अंधेर है।
कुक्कड़ सिंह आज बहुत उदास बैठा है। पता नहीं क्या बात है ?
चल कर हाल-चाल पूछना चाहिए। जानवर, जानवर के काम नहीं आयेगा तो और कौन आयेगा ?
कहीं बेचारे का गला न खराब हो गया हो और बांग न दे पाता हो।
पुरुषोत्तम लाल, तू ही देख ले आजकल आदमी के तेवर कितने बदल गए हैं। पुराने जमाने में हर काम मुर्गे की बांग सुन कर किया करता था। आजकल हम मुर्गों को पूछता भी नहीं। इसका क्या कारण है ?
मैं भल्लू से इसका कारण पूछता हूँ आजकल वह मोटी-मोटी किताबें पढ़ता रहता है।
बेटे, यह सब ओटोमेशन यानि मशीनीकरण की वजह से है। पहले आदमी को टाइम का पता करने के लिए मुर्गे के बांग की जरूरत पड़ती थी इसलिये मुर्गे का महत्व था। अब घड़ियां बन गई हैं जो मुर्गे से ज्यादा सही समय बता सकती हैं। सिनेमा-की मशीनें बन जाने के बाद अब सर्कसों को कौन पूछता है ? सारी मार मशीनों की है !
पंचतंत्र
मशीनीकरण
में जाकर गाय को भी पनी तरफ मिलाना ाहिए और फिर मशीनों खिलाफ आन्दोलन।
हां, आदमी अब तक गाय की इज्जत करता है क्योंकि उसे गाय के दूध की ज़रूरत पड़ती है।
क्या बात करते हो भाई, अब आदमी मेरी ही कहां परवाह करता है? तुमने सुना नहीं कि विलायत में एक मशीन बन रही है जिसमें सब्जी-घास डालो और वह दूध बना कर देती है।
यहां तक बात पहुंच रही है ?
(शिक्षा—मशीनीकरण से आदमियों में बेकारी ही नहीं फैलती बल्कि उससे आदमी की नजर में जानवर भी बेकार हो जाते हैं।)

ओर हट कर (एक ही वाक्य में सब दिशा) एक व्यक्ति रहता है, जो आपसे जलता है। आप उससे सावधान रहें वरना बहुत शीघ्र ही वह आप पर कुछ करने वाला है।' स्वाभाविक है कि एक या दो व्यक्ति तो ऐसा पड़ोस में निकल ही आता है जिससे आपकी चल रही होती है।

नं० ६—अपने पेशे का प्रभाव जमाने के लिए आप किसी भी व्यक्ति से कह दीजिए, 'कि आपकी जन्म-कुण्डली के केन्द्र में राहु-शनि को तक रहा है तथा केतु आपके भाग्य के चन्द्रमा पर अपनी छाया डाल रहा है। अतः आपको जप-दान करना चाहिए तथा पन्द्रह काली-चौदस को उपवास करना चाहिए पत्नी को केला-पूजन तथा बृहस्पतिवार का व्रत रखना चाहिए। आपके लिए आग से दूर रहना अच्छा है। आपकी पत्नी को कोई रोग रहता है; अतः उसकी शान्ति के लिए आप गणेश मंत्र का जाप किया करें।' कोई भी व्यक्ति उपरोक्त बातों से जरूर ही सहमत हो जाएगा। आजकल खुराक के अभाव में लगभग सबकी पत्नियां अक्सर ही किसी-न-किसी बीमारी से ग्रस्त रहती हैं।

उपरोक्त गुरों के अलावा कुछ विशेष तुक्के भी हैं, जिनकी सहायता से आप ये बता सकते हैं कि कौन व्यक्ति किस उद्देश्य से आया है ?

नं० १—आप अगर ये कह दें कि आपका कुछ खो गया है तो आप देखेंगे कि ये तुक्का पचास प्रतिशत व्यक्तियों पर फिट बैठेगा, दूसरे आप जरा अक्ल से काम लें तो मनोवैज्ञानिक आधार पर ये बताया जा सकता है कि उद्देश्य यहाँ आने का क्या है ? यदि आदमी नंगे पैर या फटी जूतियां पहने हो। कपड़े मैले तथा घुटने मोडते ही हाथ करे मगर फिर भी दक्षिणा बगैर पूछे पहले ही हाथ पर रख दे, तो समझना चाहिए कि व्यक्ति मुकदमे बाज है और इसका प्रश्न मुकदमे का है क्योंकि मुकदमे में भागते-दौड़ते कपड़े मैले तथा घुटने और जूतियां दोनों टूट जाते हैं। कचहरी में चपरासी से लेकर अधिकारी तक सब व्यक्ति पैसा मांगते हैं; इसलिए व्यक्ति को पहले ही दक्षिणा रखने का अभ्यास पड़ जाता है।

नं० २—अगर आपके पास कोई युवा-दम्पति हाथ दिखाने आ जाए तो समझना चाहिए कि प्रश्न या तो नौकरी का है या संतान का है। वैसे ज्यादा सम्भावना सन्तान न होने की है। यदि प्रश्न केवल नौकरी का हीं होता तो व्यक्ति अकेला ही आ सकता था मगर जब जवान पत्नी साथ में आयी है तो अवश्य ही प्रश्न सन्तान न होने का है।

नं० ३—अगर कोई व्यक्ति और कई व्यक्तियों के साथ सुबह-सुबह आपके पास आए, तो निःसंदेह समझना चाहिए कि केस किसी के भागने का या किसी बड़ी चोरी का है। डकैती का कदापि नहीं, क्योंकि बड़ी डकैती में किसी को भी ज्योतिषी जी का ख्याल नहीं आ सकता। इसमें भी बारीकी ये है कि अगर प्रश्नकर्ता जवान उम्र का मगर कमजोर या ऐंचक-बेंचा (बेढंगा) है, तो समझना चाहिए कि पत्नी कहीं रूठ कर चली गयी है। यदि प्रश्नकर्ता बूढ़ा या अधेड़ है मगर फिर भी हाथ में कान से ऊंची लाठी है तो समझना चाहिए कि इसका बेटा गुस्सा होकर घर से निकल गया है। चोरी में व्यक्ति हाथ में लाठी लेना अक्सर भूल जाता है।

नं० ४—इन विशेष तुक्कों के अतिरिक्त एक सामान्य तुक्का भी है। यदि बहुत बड़े सेठ और सेठानी ज्योतिषी जी के पास पहुंचें तो, निन्यानवें (९९) प्रतिशत समझना चाहिए कि केस सन्तान न होने का है क्योंकि ज्यादा तर सेठ सन्तान के अभाव से ग्रस्त रहते हैं।

इन सबके अतिरिक्त अपने पेशे को सुरक्षित रखने के लिए कुछ सावधानियों की भी आवश्यकता है। जहाँ तक हो सके बॉल-बोटम धारी और छल्लेदार नवयुवतियों जैसे लम्बे बालों वाले कालेज के विद्यार्थियों का हाथ मत देखिए क्योंकि ये लोग जरा सी देर में मुंह पर तमाचा, जटाओं की खींचा-तानी और घोटमघोट सर का हुलिया बिगाड़ सकते हैं। अगर कहीं मुसीबत में फंस कर इनका हाथ देखना ही पड़ जाए तो तुरन्त कहिए, 'कि अब की बार आपकी पढ़ाई बिल्कुल नहीं हो सकी है। मन में शंकाएं हैं। प्रोफेसर लोग आपके साथ अन्याय करने पर तुले हुए हैं। अगले महीने आपके हाथों बस फूंकने, नेताओं पर पथराव तथा वाईस-चांसलर के साथ भिड़न्त का योग है।'

ज्योतिष विद्या में ढोंग जरूरी है मगर ज्यादा नहीं वरना तो कभी-कभी केस उल्टा पड़ जाता है। एक बार एक ज्योतिषी दिल्ली, चाँदनी चौक में कुछ ज्यादा ही ढोंग कर रहे थे। एक व्यक्ति ने उन्हें चुनौती दे डाली यदि आप मेरा प्रश्न बता दें, तो मैं आपको सच्चा ज्योतिषी मान्। ज्योतिषी जी आग-बबूला हो उठे। सौ-सौ रुपये की शर्त लग गयी। व्यक्ति ने अपना प्रश्न कागज पर लिख कर रख दिया। दर्शकों की भीड़ लग गयी। ज्योतिषी ने अपना गणना-क्रम ऊंची आवाज में बोलना शुरू किया। मुकदमा, विवाह, नौकरी सतान, लाटरी, व्यापार तथा और अनेक उत्तर ज्योतिषी ने बता डाले मगर व्यक्ति हर बार मना करता गया। ज्योतिषी क्रोध में लाल हो गए। आखिर कागज खोल कर देखा गया। उसमें ऐसा प्रश्न लिखा हुआ था कि ज्योतिषी का गुरु भी वहां नहीं पहुंच सकता था। उस व्यक्ति के मुहल्ले में एक काली कुतिया घावों से बुरी तरह सड़ रही थी। उससे सारा मुहल्ला परेशान था। अतः उस व्यक्ति ने कागज में लिखा था—'कि हमारे मुहल्ले की काली कुतिया कब मरेगी ?'

हो गए न सारे हथकंडे फेल। अतः ज्यादा ढोंग और बहस-मुबाहयसे में पड़ने की जरूरत नहीं है।

ऐसी ही एक घटना आगरा की है। एक ज्योतिषी बार-बार अपने आपको त्रिकालदर्शी कह कर प्रदर्शित कर रहा था। बोर्ड पर भी उसने 'महा ज्योतिष विद त्रिकाल दर्शी' लिखा हुआ था। एक सज्जन ने उसे अपना हाथ दिखाया। फीस पांच रुपये तय हुई। ज्योतिषी जी जब हाथ देख चुके तो उन्होंने अपनी फीस मांगी। सज्जन ने कहा, 'कि मेरी जेब तो खाली है। इस समय मेरे पास कौड़ी भी नहीं है।' दोनों में कहा सुनी होने लगी। लोग इकट्ठे हुए। दोनों की बातें सुनीं। सज्जन ने दलील दी, 'कि साहब, जब ये ज्योतिषी जी महा ज्योतिषविद और त्रिकालदर्शी हैं, तो इन्हें ये भी पता होना चाहिए था कि मेरी जेब में इस वक्त फूटी कौड़ी भी नहीं है। इन्होंने मुफ्त में मेरा हाथ देखा ही क्यों था ? इसका अर्थ है ये महाराज त्रिकाल दर्शी नहीं हैं। ये ढोंगी है और ढोंगी को फीस कैसी ?'

अब आप ही बताइए कि फैसला क्या हो ?

अन्त में इस पेशे को अपनाते समय छल-कपट, बुद्धि और तिकड़म तथा तुक्के और तीर सभी से काम लेना चाहिए। सावधानी का पग-पग पर आवश्यकता है। यही हमारा दीक्षान्त उपदेश है। आगे भगवान आपकी रक्षा करेगा।

आज के मंत्री हर प्रकार से सम्पन्न हैं

सवाल यह है?

फिर उन्हें दुख किस बात का?
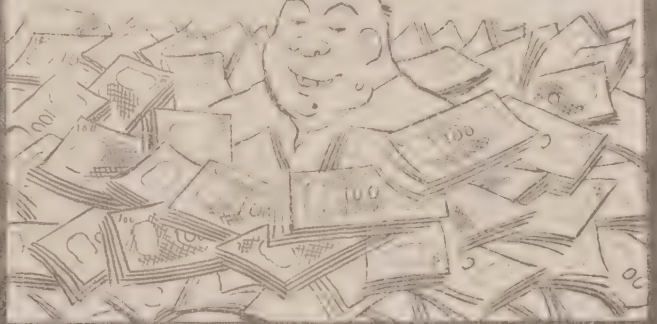
बड़ा मान है. चारों ओर जय जयकार के नारे हैं. मंत्री जी पर हर पल आकाश से फूल बरस रहे हैं.
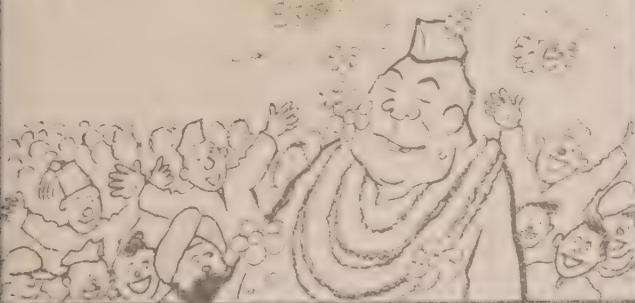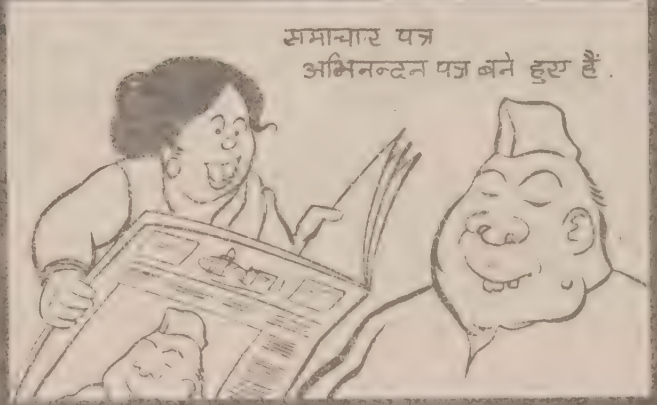
पर एक चिन्ता है जो घुन की तरह खाये जा रही है.... कौन जाने कब हमारा लाड़ला सपूत स्मगलिंग में पकड़ा जाये, या गर्ल फ्रेंड के साथ उसकी "ऐसी वैसी" तस्वीरें लोगों के हाथ आ जायें...!

सरदर्द ?
तो लीजिए
एक गिलास
पानी

RP.2158A

पृष्ठ १३ से आगे

अपने आपको शरीर के बन्धन से मुक्त करा लेने के बाद क्या शेष रह जाता है ? एक आत्मा केवल जिस द्वारा न तुम अपने प्यार करने वाले के सीने से लग सकती हो न स्पर्श करके उसकी निकटता की अनुभूति कर सकती हो ।'

'दशरथ !' वंदना की आवाज खुशी से कांप गई, 'मैं तुमसे शादी करूँगी···मैं तुमसे शादी करूँगी ।'

'सच कह रही हो वंदना ?'

'हाँ दशरथ···मैं कह रही हूँ ।'

वंदना ने बढ़ कर दशरथ को सीने से लगाना चाहा तो दशरथ ने जल्दी से हाथ उठा कर कहा—

'ठहरो वंदना ! अभी मैं यह पाप नहीं कर सकता—क्योंकि अभी तुम्हारे बदन में आत्मा है उस पर किसी और का अधिकार है···अग्नि कुण्ड के गिर्द फेरे लेने के बाद तुम्हारे शरीर में जो आत्मा होगी उस आत्मा पर मेरा अधिकार होगा ।'

'दशरथ···तुम कितने महान विचारों के स्वामी हो तुम कितने अच्छे हो ।'

'बस अब तुम जाओ वंदना···मैं आज ही तुम्हारे डैडी से मिलूंगा ।'

वंदना अपनी आंखों के आंसू पोंछने लगी—

दशरथ के सामने रचना की आत्मा खड़ी थी और दशरथ कह रहा था—

'कर्नल ने शादी की तारीख निश्चित कर दी है रचना···।'

मुझे मालूम है—' रचना मुस्करा दी, 'अगले सोमवार की रात ।'

'हाँ रचना···लेकिन···लेकिन···न जाने क्यों मेरा मन मुझे बुरा भला कह रहा है ।'

'क्यों ?'

'मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं वंदना जैसी भोली-भाली लड़की को धोखा दे रहा हूं ।'

'यह तुम्हारा भ्रम है···दशरथ ।'

'अगर वह मुझसे प्यार करने लगी हो तो ?'

'नहीं···' रचना की आत्मा मुस्कराई, 'तुम्हारे प्यार पर मेरा और केवल मेरा ही अधिकार है—मैंने तुम्हारे लिए दूसरे जन्म की तपस्या की है···इसलिए भगवान मेरे साथ यह अन्याय नहीं कर सकता ।'

'लेकिन अगर वंदना मुझसे प्यार नहीं करती तो वह मेरे साथ शादी करने के लिए क्यों सहमत हो गई ।'

'इसलिए कि वह आज भी तुम्हारे अन्दर सुरेश को ढूंढ़ रही है ।'

'तो क्या यह भी उसके साथ अन्याय नहीं है ?'

'नहीं दशरथ···क्योंकि वंदना और सुरेश का मिलन इस जीवन में लिखा ही नहीं है··· अगले सोमवार की रात वंदना के जीवन की अन्तिम रात है···उसकी आत्मा ऊपर चली जाएगी···उसका बदन मैंने भगवान से माँग लिया है···वह बदन मुझे मिल जाएगा ।'
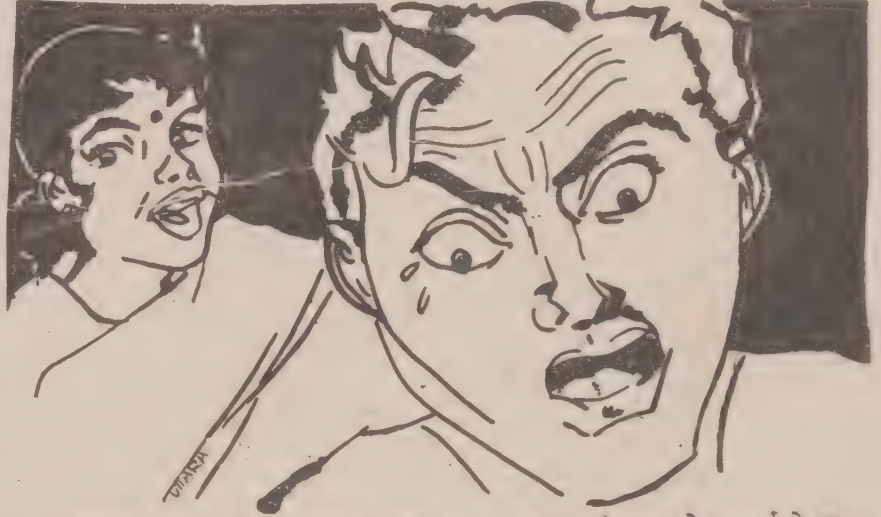
दशरथ कुछ नहीं बोला । उसके मस्तिष्क पर हल्की-हल्की रेखाओं का जाल बढ़ गया । रचना ने उसका चेहरा ध्यानपूर्वक देखा और फिर मुस्करा कर बोली—

'अच्छा···दशरथ सुबह का उजाला फैलने वाला है—अब मैं जा रही हूँ ।'

दशरथ ने चौंक कर रचना को देखा और बोला—

'जा रही हो तुम ?'

'हाँ—अब हमारे मिलन के बीच केवल कुछ ही दिनों का फासला रह गया है—सोमवार की रात को हम दोनों सदा के लिए एक हो जाएंगे ।'

दशरथ रचना को देखता हुआ मुस्करा कर बोला—

'और मैं उस रात की बेचैनी से प्रतीक्षा करूंगा ।'

फिर सूरज की पहली किरण के साथ ही रचना दशरथ की दृष्टि से ओझल हो गई ।

दशरथ की आँख खुलीं तो उसके कानों से ऐसी हल्की-हल्की आवाजें टकराईं जैसे कोई उसे पुकार रहा हो ।

दशरथ मस्तिष्क पर बल देता रहा··· फिर यह आवाज स्पष्ट होती गई । वास्तव में यह रधिया की आवाज थी जो उसे पुकार-पुकार कर जगा रही थी । दशरथ हड़बड़ाकर उठ बैठा···रधिया ने कहा—

'मैं कितनी देर से पुकार रही हूं, बाबूजी ।'

'ओह क्षमा करना···मैं गहरी नींद में था ।'

'कोई आपसे मिलने आया है ।'

'मुझसे !' दशरथ ने आश्चर्य से पूछा ।

'हाँ—आपसे ।'

'कौन है ?'

'यह तो मालूम नहीं—कोई जवान-सा आदमी है ।'

दशरथ उठ कर बाहर के कमरे में चला आया । वहाँ एक नौजवान उसकी ओर पीठ किए दीवार पर लगी तस्वीर को ध्यानपूर्वक देख रहा था । दशरथ ने ऊपर से नीचे तक उसे निहारा···वह दशरथ के लिए अजनबी ही लगता था—उसने बहुत बहुमूल्य कपड़े पहन रखे थे जो मसले हुए और मैले हो रहे थे—लगता था जैसे कई महीनों से वह यही कपड़े पहन रहा हो···उसके सिर के बाल भी उलझे हुए थे—

दशरथ ध्यान से उसे देखता रहा··· फिर उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए वह धीरे से खंखारा । नौजवान चौंक कर दशरथ की ओर मुड़ा···दशरथ ध्यानपूर्वक उसे देखने लगा । बड़ा सुन्दर नौजवान था लेकिन उसकी शेव बढ़ी हुयी

थी···आंखें लाल-लाल और सूजी हुई थीं··· आंखों के नीचे काले गढ़े पड़े हुए थे···होंठ सूख रहे थे और चेहरे से घबराहट झांक रही थी—

नौजवान ने दशरथ की ओर देखते हुए फीकी-सी मुस्कराहट के साथ कहा—

'आप शायद मुझे पहचानने का प्रयत्न कर रहे हैं।'

'मुझे लगता है···हम दोनों की भेंट इससे पहले कभी नहीं हुई।

'जी हाँ—यह हमारी पहली भेंट है।'

'कहिए···मैं क्या सेवा कर सकता हूँ।'

'अगर मैं आपको अपना नाम बता दूं तो न जाने आप मेरे साथ क्या व्यवहार करें।'

'बताइए···मैं इतना अशिष्ट नहीं।'

'मेरा नाम सुरेश है—।'

'सुरेश !!'

दशरथ के मस्तिष्क को एक जोरदार झटका लगा और वह आश्चर्य से आंखें फाड़े सुरेश को देखने लगा। सुरेश ने फीकी-सी मुस्कराहट के साथ कहा—

'शायद आप मेरे नाम से मुझे न पहचानें···क्योंकि जैसे आपने मुझे पहले देखा नहीं वैसे ही आपने मेरा नाम भी नहीं सुना था।'

दशरथ के होंठों पर भी मुस्कराहट फैल गई और वह बोला—

'जी नहीं···मैंने आपको पहले देखा तो नहीं लेकिन आपका नाम अवश्य सुना है।'

नौजवान ने विस्मय से पूछा—

'कहाँ···और किससे ?'

'इस दुनिया में—वंदना से···।'

'वंदना से···?'

'जी हाँ···।'

'क्या बताया था उसने ?'

'क्या यह बताने की भी जरूरत रह जाती है ?'

'हाँ मैं जानना चाहता हूँ···।'

'तो सुनिए···वंदना ने बताया था कि वह आपसे प्यार करती थी और आप केवल उसके 'ग्लैमर' से··उसके शारीरिक सौन्दर्य से प्यार करते थे।'

'ओह···!'

'आपको वंदना से कोई अधिक ग्लैमर वाली लड़की मिल गई और आप वंदना को ठुकरा कर चले गए।'

सुरेश ने एक लम्बी और गहरी सांस ली और बोला—

'यह सब जानते हुए भी आप वंदना से शादी कर रहे हैं ?'

'अगर आप यहां तक भी कह दें कि आपने वंदना की पवित्रता को भंग कर दिया है···तो भी मैं उसके साथ जरूर शादी करूंगा।'

सुरेश का चेहरा उतर गया और वह फीकी-सी मुस्कराहट के साथ बोला—

'आपका विचार गलत है···मैं इतना नीच नहीं कि···वंदना गंगा के समान शुद्ध और पवित्र है।'

'फिर आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया है ?'

'आपके सामने सच्चाई रख कर वंदना की भीख मांगने के लिए।'

'क्या मतलब ?' दशरथ चौंक पड़ा।

'दशरथ बाबू ! मैं आपसे यह बताना चाहता हूँ कि मैं भी वंदना से प्यार करता हूँ।'

'बहुत सुन्दर···' दशरथ ने व्यंग्य से कहा, 'इसीलिए आप वंदना को छोड़ कर चले गए थे।'

'मैं वंदना को छोड़ कर चला गया था लेकिन वंदना मेरे दिल से नहीं गई थी।'

'ओहो—क्या अब मिस बम्बई का ग्लैमर समाप्त हो चुका है—अब आपको शायद वंदना जैसे किसी शरीर के ग्लैमर की जरूरत है।'

सुरेश के होंठों पर फिर फीकी-सी मुस्कराहट फैल गई और वह बोला—

'इसका मतलब यह है कि वंदना ने आपसे कुछ भी नहीं छिपाया।'

'नहीं—मुझे सब कुछ मालूम है।'

'लेकिन आप बहुत सारी सच्चाइयों को नहीं जानते।'

'वह क्या ?'

'यह सच है कि मैं वन्दना की ओर उसके ग्लैमर के कारण आकर्षित हुआ था ···लेकिन फिर मैं उससे अटूट प्यार भी करने लगा था। मुझे अनुभव हुआ कि वन्दना को मेरे और केवल मेरे लिए बनाया गया हो—वन्दना एक चंचल और नटखट तितली के समान थी···मैं समझता था कि वन्दना जिस ग्लैमर के जीवन में रहती है वैसी ही उसकी प्रवृत्ति भी होगी··

'एक दिन बाग में रात को मैं और वन्दना बैठे बातें कर रहे थे···हम दोनों बड़े रोमांटिक मूड में थे···मैंने वन्दना को बांहों में भरकर भींचकर चूम लिया···वह प्यार मेरे जीवन का पहला प्यार था··· जानते हैं इसका उत्तर मुझे क्या मिला···? एक चांटा···उस वन्दना का चांटा जो मुझे प्यार करती थी···मैं भौंचक्का-सा रह गया ···अचानक वन्दना दोनों हाथों से मुंह छिपाकर रोने लगी···उसने कहा कि वह मुझे बहुत चाहती है लेकिन शादी से पहले ऐसे प्यार को पाप समझती है···उस दिन मेरे मन में वन्दना के प्रति प्यार और श्रद्धा बढ़ गई–

शेष आगामी अंक में

राजनीतिक भांडा फोड़ चित्र

श्री राजनारायण पैदा होने के बाद नर्स की बांहों में (हमारे कलाकार द्वारा कल्पना चित्र)

****

राकेश कुमार बब्बर, कमल प्रोविजनल स्टोर शक्ति नगर, (रोहतक), २० वर्ष, छोटे बच्चों से प्यार करना, दूसरों की सहायता करना।

कमल कुमार अग्रवाल 'अज-नबी' पापुलर लायब्रेरी भाटा-पारा, नया गंज वार्ड, १७ वर्ष, पुस्तक पढ़ना, दिन भर खुश रहना।

चतुर्भुज प्रमुलमल बजाज, शिव गुड़ भंडार, इतवारा अनाज बाजार, अमरावती, २५ वर्ष, सिनेमा देखना और अखबार पढ़ना।

ओम प्रकाश साहा, ग्राम मोहद्दी नगर, पोस्ट मिरजान-हाट, जिला भागलपुर, २४ वर्ष, रेडियो के सभी प्रोग्राम सुनना, मित्रता करना।

जसबीर सिंह चुग, गली नं० ११, मकान नम्बर ३, मण्डी गुरुहर सहाय, १७ वर्ष, डाक्टरी सीखना, दूसरों का भला करना।

इन्द्रजीत, जी०-२३, सीलम-पुर, दिल्ली, १७ वर्ष, कार चलाना, दिल्ली को रुलाना, पढ़ना, पत्र-मित्रता करना, सैर करना।

सदाशिव पाटीदार, गुलझरा बामनोद, (म० प्र०), १७ वर्ष, पढ़ना, टेनिस खेलना, गरीबों की मदद करना और दाद देना।

प्रतीक कुमार तिवारी, बी०-६६/१ मानक नगर, लखनऊ, १२ वर्ष, सिक्के व टिकट जमा करना, स्काउट बनना, मित्रता बढ़ाना।

जितेन्द्र कुमार घई, चिन्त-पुर्नी, २१ वर्ष, पढ़ना, हार-मोनियम बजाना, रेडियो में फर्माइश भेजना, पैदल यात्रा करना।

विजय मोहनामी पुत्र श्री दौलतराम जी गार्ड, क्वाटर नम्बर टी० आई० ई०-१३-ई०, आबूरोड, १८ वर्ष, कैरम खेलना।

गिरिराज दास चाडके, कैलाश चन्द प्रमोद कुमार, श्री करणपुर, जिला गंगानगर, २० वर्ष, टिकट संग्रह करना।

हरीश कुमार बरयानी, लक्ष्मी फैन्सी स्टोर, हास्पीटल रोड, आगरा, १६ वर्ष, संगीत, पत्र-व्यवहार करना, मित्रता करना।

ताहिर अली, दिल-फिजा हाउस, कदम कुआं, पटना, (बिहार), १६ वर्ष, चुटकुला सुनना, मोटर साइकिल चलाना, घूमना।

मुहम्मद अली, दिल फिजा हाउस, कदम कुआं पटना, १० वर्ष, झगड़ा करना। पिटकर भाग लेना और सोच करना।
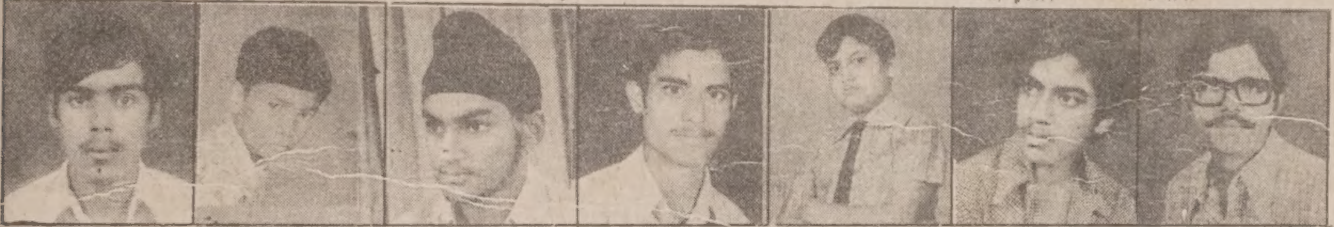
सुनील दत्त शर्मा, ३८१ पठानपुरा, शाहदरा, दिल्ली, १६ वर्ष, नावल पढ़ना, देव आनन्द की फिल्में देखना, एक्टिंग करना।

प्रकाश कुमार बनोरा, नेवार घरान त्रिभवन पथ, २१८ काशी अंचल (नेपाल), १२ वर्ष, हंसना और हंसाना और खुश रहना।

सतबीर सिंह छाबड़ा, ७०, पालसीकर कालोनी इन्दौर, (म० प्र०), १६ वर्ष, सच्ची दोस्ती रखना, बाहर घूमने के लिए जाना।

कन्हैया जगमलिया, प्रिंस क्लब जराभाटा सिंधी कालोनी बिलासपुर, २० वर्ष, फर्माइश भेजना, पत्र-मित्रता करना, चित्रकारी।

विनोद कुमार सिंगल, उर्फ बिको ९१, जवाहर मार्केट, धान मण्डी), श्रीगंगानगर, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, कार चलाना।

रमेश कुमार मुन्दड़ा, मुन्दड़ा भवन, झारसुगुडा (उड़ीसा), १७ वर्ष, शतरंज खेलना, डाक टिकट संग्रह करना, खेलना।

महेशचन्द्र रस्तोगी, रस्तोगी नावल्टी स्टोर हरा वार्ड गोकुल दास रोड, एम० बी०, २२ वर्ष, लड़कों से दोस्ती करना और बिगाड़ना।
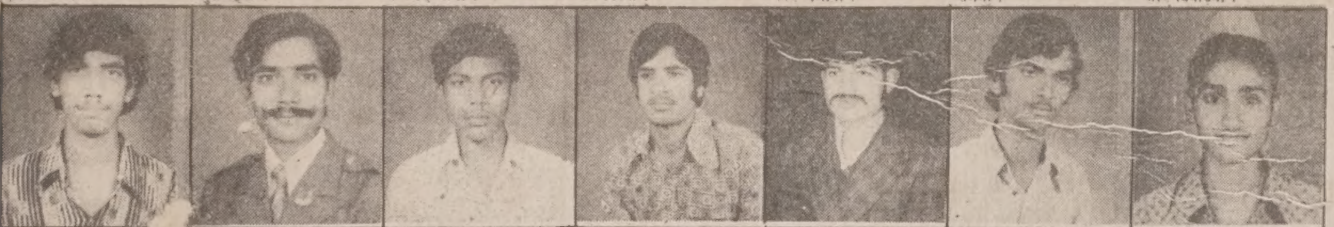
अशोक कुमार गुप्ता, ३८० पटेल नगर, रेलवे रोड, हापुड़, जिला गाजियाबाद, १८ वर्ष, पढ़ना, फिल्में और टी० वी० देखना।

जितेन्द्र कुमार शर्मा, सुनारों की गली, सम्भल (मुरादा-बाद) २३ वर्ष, पढ़ना, दीवानों को दीवानी नजरों से देखना।

म० इकबाल, नागपाड़ा बम्बई, १६ वर्ष, खाना खाना और दिन भर आराम करना, छोटे बच्चों को दादागीरी दिखाना।

हरीश कुमार सलूजा, एक्स./ ए३३ गांधी नगर, दिल्ली, १८ वर्ष, सुन्दर लड़कों से मित्रता करना, तरह-तरह के कपड़े पहनना।

इंद्र भूषण सफाया, बगदजी रैंयाबारी श्रीनगर (कश्मीर), २१ वर्ष, हंसना हंसाना, तफरी करना, बेकार घूमना-फिरना।

वैश्य प्रेमचंद्र एम०, ११, आवुमेंशन बिल्डिंग, तलमजला डिलाईल रोड, बम्बई, २१ वर्ष, बम्बई युनिवर्सिटी में फर्स्ट आने की कोशिश।

हरविंद्र सिंह, डब्ल्यू० जैड० २८३/४५ विष्णु गार्डन नई दिल्ली, १६ वर्ष, फिल्में देखना, सारे दिन काम करना और आराम करना।
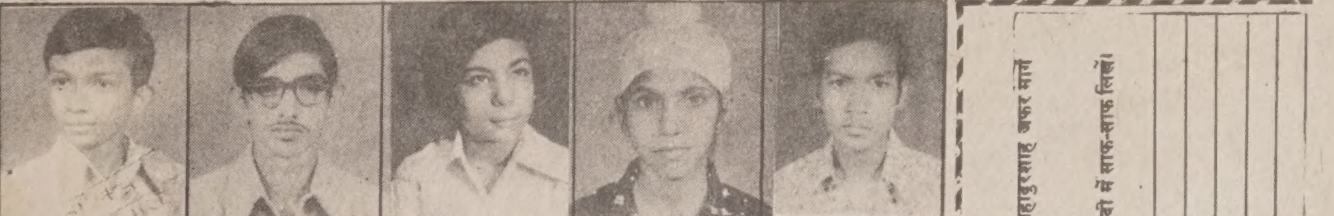
नरवाद अग्रवाल, डी-२४, टंडन रोड, आदर्श नगर, दिल्ली, १६ वर्ष, हीरो बनना, बड़ों का आदर करना और तैरना।

मो० शकील अंजुम, जनता बेकरी हरिजन रोड, गुभला जि० रांची, १८ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, रेडियो सुनना और जासूसी करना।

गिरीश गाबा, २० आदर्श कालोनी खंडवा, ११ वर्ष, साईकिल चलाना, गप्प मारना, पढ़ना, आपस में सहयोग देना।

हरविंद्र पाल सिंह, राम गली नम्बर ६, प्लाट नम्बर सी० ७६, जयपुर, १२ वर्ष, अंधेरे में नावल्स पढ़ना, फिल्म देखना और खिलाना।

राधू प्रसाद, खिचापोखरी काठमाडो (नेपाल), १७ वर्ष, पढ़ना, मिडजिकल बजाना, कार चलाना, हवाई जहाज में बैठने की इच्छा।

हमारा पता : दीवाना ८-ब बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली-११०००२
कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ-साफ लिखें।
नाम ____________
पता ____________
आयु ________ शौक ________

दीवाना फ्रैंड्स क्लब

दीवाना फ्रैंड्स क्लब! के मेम्बर बन कर फ्रेंडशिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिए जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित कर दिया जायेगा। लिफाफे के कोने पर 'पेन फ्रेन्ड' लिखना व फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।

तेज प्रेस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित। प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

साप्ताहिक भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी
सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा

६ नवम्बर से १५ नवम्बर ७८ तक

मेष : यह सप्ताह कुछ परिवर्तन लेकर आया है. नया काम या कोई भी निर्णय करने में सावधानी आवश्यक है, मित्रों का सहयोग ऐसे ... लाभप्रद रहेगा, व्यय अधिक, यात्राएं ...क, कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी ।

वृष : इस सप्ताह में भी प्रायः वैसे ही हालात चलेंगे जैसे पिछले दिनों से चले आ रहे हैं, सुधार एवं प्रगति की नई योजनाएं आएंगी परन्तु आप उन पर किसी विशेष कारणवश अमल न कर पायेंगे, लाभ बढ़ेगा ।

मिथुन : परिश्रम एवं लगन से काम करने पर इस सप्ताह के दौरान उचित लाभ प्राप्त होगा. यात्राएं भी हो सकती हैं जो लाभप्रद रहेंगी, भाग्य आपके साथ है, प्रयत्न करने पर सफलता मिलेगी, आमदनी अच्छी ।

कर्क : कोई नई चिन्ता पैदा होगी, जिसके कारण परेशानी एवं शारीरिक कमजोरी भी महसूस होगी. फिर भी यह सप्ताह अच्छा रहेगा, सफलता मिलती रहेगी, शत्रु सामना न कर सकेंगे, प्रयत्न सफल रहेंगे ।

सिंह : पिछले दिनों की तुलना में यह सप्ताह कुछ अच्छा रहेगा, कुछ गम्भीर समस्यायें धीरे-धीरे सुलझने लगेंगी, भाग्य भी आपका साथ देगा और परिश्रम करने पर कोई रुका हुआ काम बन जायेगा, लाभ अच्छा होगा ।

कन्या : कोई विशेष समाचार मिल सकता है, किसी प्रियजन से संयोग या वियोग, मनोरंजन आदि पर व्यय होना रहेगा, शुभफलों से युक्त होने पर भी सप्ताह विशेष अच्छा नहीं है, यात्रा अचानक, सेहत को संभाल कर रखें ।

तुला : यह सप्ताह भी प्रायः पहले जैसा ही रहेगा. आप चाहेंगे कुछ, करेंगे कुछ, और होगा कुछ । कामकाज में व्यस्तता बढ़ेगी, घर-परिवार की समस्याओं से परेशानी, व्यय यथार्थ, लाभ बढ़ेगा, प्रयत्न सफल रहेंगे ।

वृश्चिक : इन दिनों शुभ-अशुभ मिश्रितफल मिलते रहेंगे. परन्तु व्यापारिक एवं घरेलू हालात पर नियंत्रण रखने के लिए आपको काफी प्रयत्न एवं परिश्रम करना पड़ेगा, यात्रा की आशा है. कारोबार में उन्नति होगी ।

धनु : यह सप्ताह है तो काफी अच्छा परन्तु इस दौरान आप स्वयं अपने लिए कठिनाईयां पैदा करते रहेंगे, आत्म विश्वास बढ़ेगा और परिश्रम करने पर सफलता भी मिलेगी, नई वस्तुओं की खरीद होगी ।

मकर : इन दिनों कामकाज में काफी व्यस्तता रहेगी और परिश्रम भी अधिक करना पड़ेगा, व्यर्थ की उलझनों से परेशानी, आय में वृद्धि, कोई बिगड़ा काम बन जावेगा, सज्जन पुरुषों का परामर्श लाभप्रद सिद्ध होगा ।

कुम्भ : शुभ फलों से युक्त होने पर भी सप्ताह विशेष अच्छा नहीं, व्यर्थ के संकटों से परेशान, दौड़ धूप अधिक, नातेदारों की ओर से चिन्ता, लाभ पहले समान ही होगा, कुछ रुकावटों का सामना करना पड़ेगा ।

मीन : यह सप्ताह मिश्रितफलों वाला है, परिश्रम काफी करना पड़ेगा, आर्थिक स्थिति में परिवर्तन होता रहेगा, कभी बहुत मजबूत तो कभी धन की कमी महसूस होगी, परिवार से सुख, पराई औरत से सावधान रहें ।

'मुझे हर तरह के रोल स्वीकार हैं'

काजल किरण

विजय भारद्वाज

काजल किरण आज भी नवोदित हीरोइनों में से एक हैं । इकहरे बदन की, छोटे कद की यह सुन्दर अभिनेत्री अपनी प्रथम फिल्म 'हम किसी से कम नहीं' से ही चर्चित हो गई । इस फिल्म की सफलता के बाद काजल को अपना भविष्य बनाने के लिए थोड़ा इन्तजार करना पड़ा । लेकिन आज यह कई फिल्मों में कार्य कर रही हैं ।

अभिनय प्रतिभा काजल में है इसमें कोई शक नहीं । लेकिन यह उतनी भाग्यशाली अभिनेत्री भी नहीं हैं जिनमें टीना मुनीम, सिम्पल कपाड़िया, व रंजीता का नाम लिया जाता है ।

गोल चेहरा, गोल आंखें और उस पर गोल ही माथे पर लगी बिन्दिया। उस दिन काजल किरण के चेहरे पर बेहद सुन्दर लग रही थी जब मैंने दीवाना साप्ताहिक की भेंटवार्ता के लिये उनसे मिला ।

काजल किरण की गोल कजरारी आंखों में झांकने पर ऐसा लगता है कि उनमें कुछ कर गुजरने की इच्छा है, ख्वाईश है, तमन्ना है । झील सी इन गहरी आंखों में भविष्य के वह सपने छिपे हैं जिन्हें काजल किरण साकार करना चाहती हैं ।

'आपको एक नवोदित अभिनेत्री के तौर पर फिल्म उद्योग के काफी अनुभव हो चुके होंगे । कुछ दुखदायक भी होंगे तो कुछ कटु भी । इस बारे में आप कुछ हमारे पाठकों को बतायेंगी ।

'फिल्म उद्योग में कदम रखना एक लम्बे संघर्ष से जूझने के समान है । आज पूना इन्स्टीच्यूट के कितने ही डिप्लोमा होल्डर लड़के लड़कियां हैं जो धक्के खाते काम की तलाश में एक जगह से दूसरी जगह चक्कर काट रहे हैं । मुझे भी फिल्मों में काम करने के लिये एक लम्बे समय तक भागदौड़ करनी पड़ी । लेकिन प्रथम फिल्म के हिट होते ही मेरी भागदौड़ रंग ले आई और मेरी मांग बन गई । मेरे को उज्जकल भविष्य की एक झलक नजर आई । और खुदा का शुक्र है कि इस फिल्म के बाद मुझे किसी के पास रोल मांगने नहीं जाना पड़ा । काजल

ने अपनी साड़
हुये कहा ।
'आप वि
हैं ?'
'मैं किस
होकर नहीं र
रोल करना प
भूमिका हो, च
रोल स्वीकार
करते हुए कह
'सैक्स से
मिले तो क्या
मना कर देंग
'मैं हर
शाट उसी मी
पास कर दे ।
एक्सप्लायर अ
अशलील सीन
सेंसर की कैंच
भला उन द
लाभ ?' काज
'क्या यह
के अधार पर
'जी हां
ज़ोर से हंस

करन
छाया: जगमोहन
दीवाना

परोपकारी

Regd. No. D (D)